दमण से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Asli Azadi Dainik @AsliAzadiDainik

asliazadidainikofficial

असली आज़ादी

The Voice of Union Territory Dadra and Nagar Haveli and Daman-Diu Since 2005

www.asliazadi.com

■ वर्ष: 21, अंक: 15 ■ दमण, गुरुवार 02 अक्टूबर 2025, ■ पृष्ठ: 8 ■ मूल्य: 2 रु ■ RNI NO-DDHIN/2005/16215 ■ संपादक- विजय जगदीशचंद्र भट्ट

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी समारोह को संबोधित किया

आरएसएस के स्वयंसेवक राष्ट्र की सेवा और समाज को सशक्त बनाने के लिए अथक रूप से समर्पित रहे हैं: पीएम मोदी

■ प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के प्रति आरएसएस के योगदान को रेखांकित करते हुए विशेष रूप से डिजाइन किया गया स्मारक डाक टिकट और सिक्का जारी किया ■ एक शताब्दी पहले हुई आरएसएस की स्थापना राष्ट्रीय चेतना की स्थायी भावना दर्शाती है, जो हर युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए उभरी है: प्रधानमंत्री ■ मैं परम पूज्य डॉ. हेडगेवार जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं: प्रधानमंत्री ■ आज जारी किया गया स्मारक टिकट एक श्रद्धांजलि है, जो 1963 के गणतंत्र दिवस परेड में गर्व से मार्च करने वाले आरएसएस स्वयंसेवकों का स्मरण कराता है: प्रधानमंत्री ■ अपनी स्थापना से ही आरएसएस राष्ट्र निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता रहा है : प्रधानमंत्री ■ आरएसएस की शाखा प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत है, जहां 'मैं' से 'हम' की यात्रा आरंभ होती है: प्रधानमंत्री ■ आरएसएस के एक शताब्दी के कार्य की नींव राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य, व्यक्तिगत विकास के एक स्पष्ट मार्ग और शाखा की गतिशील कार्यप्रणाली पर टिकी हुई है: प्रधानमंत्री ■ आरएसएस ने अनगिनत बलिदान दिए हैं, 'राष्ट्र पहले' और एक लक्ष्य ■ 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सिद्धांत से निर्देशित है : प्रधानमंत्री ■ संघ के स्वयंसेवक समाज के प्रति दृढ़ और प्रतिबद्ध बने रहते हैं और उनकी संवैधानिक मूल्यों में आस्था है : प्रधानमंत्री ■ संघ देशभक्ति और सेवा का प्रतीक है : प्रधानमंत्री ■ दूसरों के दुख को कम करने के लिए व्यक्तिगत कष्ट सहना प्रत्येक स्वयंसेवक की पहचान है: प्रधानमंत्री ■ संघ ने जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों में आत्मसम्मान और सामाजिक जागरूकता का संचार किया है : प्रधानमंत्री ■ पंच परिवर्तन प्रत्येक स्वयंसेवक को राष्ट्र की चुनौतियों का सामना करने और उन पर विजय पाने के लिए प्रेरित करता है : प्रधानमंत्री

पीएम मोदी ने आजादी के आंदोलन में संघ की स्वतंत्रता सेनानियों की सहायता और आजादी के बाद गोवा और दादरा नगर हवेली की मुक्ति योगदान और बलिदान को याद किया

प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि संघ ने अनेक स्वतंत्रता सेनानियों की सहायता की और उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। उन्होंने चिमूर में 1942 के आंदोलन का उदाहरण दिया, जहां कई स्वयंसेवकों ने ब्रिटिश शासन के भीषण अत्याचार सहे थे। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के बाद भी संघ ने हैदराबाद में निजाम के उत्पीड़न का विरोध करने से लेकर गोवा और दादरा एवं नगर हवेली की मुक्ति में योगदान देने तक- बलिदान देना जारी रखा।

नई दिल्ली (पीआईबी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज नई दिल्ली स्थित डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के शताब्दी समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित किया। श्री मोदी ने इस अवसर पर सभी नागरिकों को नवरात्रि की शुभकामनाएं दीं और कहा कि आज महानवमी और देवी सिद्धिदात्री का दिन है। उन्होंने कहा कि कल विजयादशमी का महापर्व है, जो भारतीय संस्कृति के शाश्वत उद्घोष, अन्याय पर न्याय, असत्य पर सत्य और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि ऐसे ही पावन अवसर पर 100 वर्ष पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई थी और कहा कि यह कोई संयोग नहीं है। उन्होंने कहा कि यह हजारों वर्षों से चली आ रही एक प्राचीन परंपरा का पुनरुद्धार है, जिसमें राष्ट्रीय चेतना प्रत्येक युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए नए रूपों में प्रकट होती है। उन्होंने कहा कि इस युग में संघ उस शाश्वत राष्ट्रीय चेतना का एक सद्गुणी अवतार है। पीएम मोदी ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष का साक्षी बनना वर्तमान पीढ़ी के स्वयंसेवकों के लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने राष्ट्रसेवा के संकल्प में समर्पित असंख्य स्वयंसेवकों को अपनी शुभकामनाएं भी दीं। प्रधानमंत्री ने संघ के संस्थापक और पूज्यनीय

(समाचार का शेष पेज 3 पर)

Government of India

Ministry of Road Transport and Highways

संबंधित व्यक्ति विवरण परिवहन वेबसाइट **https://parivahan.gov.in/** पर देख सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया ईमेल करें - आईडी: helpdesk-vahan[at]gov[dot]in and helpdesk-sarathi[at]gov[dot]in

CBC 37101/13/0011/2526

केंद्रीय मंत्री सुरेश गोपी का बड़ा बयान, लाशों से वोट डलवा रहे केरल की सत्ता में काबिज लोग

-कांग्रेस और वाम दलों पर मतदाता सूची में हेरफेर के आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। एसआईआर यानी विशेष गहन पुनरीक्षण और विपक्ष के वोट चोरी के आरोपों के बीच केंद्रीय मंत्री और मलयालम अभिनेता सुरेश गोपी ने बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा कि जिन लोगों को लाशों ने चुना है, वे सालों से केरल में सरकार चला रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, वे थ्रिसूर में हुए विवाद पर चर्चा कर रहे थे। यहां कांग्रेस और वाम दलों पर मतदाता सूची में हेरफेर के आरोप लगे थे। गोपी का दावा था कि केरल की मतदाता सूची में कई मरे हुए लोगों को भी सक्रिय वोटर दिखाकर शामिल किया गया था। केंद्रीय मंत्री गोपी पर भी आरोप लगे थे कि उन्होंने मतदाता सूची से छेड़छाड़ की थी। इस पर गोपी ने कहा, जो लोग जीतने के लिए लाशों से वोट डलवा रहे हैं, ये वहीं लोग हैं जो इतने समय से केरल में सत्ता में हैं। 25 साल पहले दफन हुईं लाशों से वोट डलवाए गए। आप सभी ने इसके बारे में बताया था। उन्होंने थ्रिसूर से जीत को लेकर कहा कि वह भाजपा के प्रभाव वाले पलक्कड़ या तिरुवनंतपुरम से नहीं जीते हैं। उन्होंने कहा, मैं थ्रिसूर से जीता था, जहां भाजपा का ऐसा वर्चस्व भविष्य में भी नहीं हो सकता। मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि ईश्वर मेरे साथ थे। उन्होंने केरल की राजनीति में बदलाव की भी बात कही है।

क्रॉसिंग बंद तो शख्स बना शक्तिमान, कंधे पर बाइक रख पार की रेलवे लाइन

-वीडियो वायरल होते ही पुलिस ने लिया संज्ञान, अब आरपीएफ करेगी कार्रवाई

झांसी (एजेंसी)। यूपी के झांसी में एक शख्स बंद रेलवे क्रॉसिंग को पार करने के लिए शक्तिमान बन गया उसने अपनी बाइक को कंधे पर उठाकर रेलवे लाइन पार कर ली। यह वीडियो झांसी-कानपुर रेलवे लाइन के पास मोंठ का बताया जा रहा है। बता दें झांसी-कानपुर रेलवे लाइन की क्रॉसिंग पर एक शख्स ने बंद रेलवे क्रॉसिंग को पार करने के लिए अपनी बाइक को कंधे पर उठा लिया। इस वीडियो को किसी ने रिकॉर्ड करके वायरल कर दिया। यह वीडियो दो-तीन दिन पहले का बताया जा रहा है। वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने इस मामले की जांच शुरू कर दी है। मोंठ थाना प्रभारी ने बताया कि बाइक को कंधे पर उठाकर ले जाने वाले शख्स का नाम प्रदीप है। वह समथर थाना क्षेत्र के कडूरा गांव का रहने वाला है। वायरल वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि रेलवे क्रॉसिंग पर वाहनों की लंबी कतार लगी थी और उसी समय इस शख्स ने ऐसा कदम उठाया। पुलिस ने बताया कि मामला रेलवे क्रॉसिंग पार करने से जुड़ा है, इसलिए इस पर आगे की कार्रवाई आरपीएफ करेगी। पुलिस ने वायरल वीडियो का संज्ञान लिया और तुरंत इसकी जांच शुरू की। पुलिस ने बताया कि यह घटना रेलवे सुरक्षा नियमों के उल्लंघन का मामला है। शख्स के खिलाफ अभी तक किसी तरह की कार्रवाई की जानकारी नहीं दी गई है। बता दें इस तरह के वीडियो अक्सर लोगों को लापरवाही बरतने और अपनी जान जोखिम में डालने के लिए उकसाते है।

त्रिपुरा में जेल से छह कैदी फरार

त्रिपुरा (एजेंसी)। उत्तर त्रिपुरा के धर्मनगर उप-जेल से बुधवार को छह कैदी फरार हो गए। इनमें से एक कैदी आजीवन कारावास की सजा काट रहा था। उत्तर त्रिपुरा के एसपी अविनाश कुमार राय ने पुलिस अधिकारियों के साथ मिलकर फरार कैदियों को पकडऩे के लिए अभियान शुरू कर दिया है।सब-डिविजनल मजिस्ट्रेट देबजानी चौधरी ने बताया कि आज सुबह करीब 6 बजे कैदियों को रोजमर्रा के कार्य और नाश्ते के लिए सेल से छोड़ा गया था। तभी अचानक छह कैदियों ने जेल गार्ड गेंदू मिया पर हमला कर उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया और जेल के मुख्य द्वार से फरार हो गए। फरार कैदियों में सुनील देबबर्मा उम्रकैद की सजा काट रहा था। घटना के बाद जिले के सभी पुलिस थानों को अलर्ट कर दिया गया है और सभी निकासी बिंदुओं को सील कर दिया गया है।

ड्राइवर ने खोया नियंत्रण, कार हाईवे पर खड़े ट्रक से टकराई, 6 की मौत

मुजफ्फरनगर (एजेंसी)। यूपी के मुजफ्फरनगर में एक कार की ट्रक से 6 लोगों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि कार की रफ्तार तेज होने से ड्राइवर ने नियंत्रण खो दिया और वह हाईवे किनारे खड़े ट्रक से टकरा गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचे राहगीरों ने घायलों को बाहर निकाला। यह हादसा बुधवार का है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इस हादसे की जानकारी मिलने के बाद पुलिस की टीम तुरंत घटनास्थल पर पहुंची और सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। वहां डॉक्टरों ने 5 लोगों को मृत घोषित कर दिया। दो घायलों को मेरठ रेफर किया गया, जहां एक की इलाज के दौरान मौत हो गई। इस हादसे में कुल 6 लोगों की मौत हो चुकी है। हादसे में मरने वालों में तीन महिलाएं और तीन पुरुष शामिल हैं। यह पहली बार नहीं है जब यूपी में इस तरह का भीषण सड़क हादसा सामने आया है। बता दें इससे पहले 27 सितंबर को उन्नाव में लखनऊ-आगरा एक्सप्रेसवे पर हुए भीषण हादसे में 4 लोगों की मौत हो गई थी।

राजनाथ सिंह बोले- पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में पूरा हिसाब-किताब बराबर

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर को खत्म हुए करीब चार महीने का वक्त बीत चुका है। भारतीय सेना और वायुसेना द्वारा संयुक्त रूप से प्रदर्शित की गई वीरता और साहस ने पाकिस्तान में मौजूद आतंकवादियों के 9 ठिकानों को नेस्तनाबूद कर पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में पूरा हिसाब-किताब बराबर कर लिया है। इन बीच रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने राजधानी में वायुसेना द्वारा आयोजित की गई एक संगोष्ठी में भारत के इस सैन्य अभियान को तीनों सेनाओं के बीच तालमेल का बेहतरीन उदाहरण बताते हुए कहा कि मौजूदा सुरक्षा परिवेश में दुनिया में तेजी से बदल रही है, खतरे कहीं अधिक जटिल हो गए हैं। ऐसे में हमें ये स्वीकार करना होगा कि कोई भी सेना अलग-थलग होकर काम नहीं कर सकती है। किसी भी संघर्ष में कामयाबी के लिए अब अंतर संचालन और एकजुटता आवश्यक है। रक्षा मंत्रालय ने एक बयान जारी कर यह जानकारी दी है।

रक्षा मंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार का उद्देश्य सेना, वायुसेना और नौसेना के बीच एकजुटता और एकीकरण को बढ़ावा देना है। ये केवल एक नीतिगत मामला नहीं है। बल्कि तेजी से बदलते हुए सुरक्षा परिदृश्य के बीच अस्तित्व का भी एक प्रश्न है। एकजुटता का मार्ग संवाद, समझ और परंपराओं के सम्मान में शामिल है। तीनों सेनाओं को नई प्रणालियों का निर्माण करते समय एक-दूसरे की चुनौतियों का सम्मान करना चाहिए। ऑपरेशन सिंदूर से एकीकृत संचालन की तस्वीर, समय पर निर्णय लेने में सक्षमता, स्थिति आधारित जागरूकता में वृद्धि और अपने नुकसान के जोखिम को घटाना जैसे बिंदु हमारे सामने आए हैं। उन्होंने वायुसेना की एकीकृत वायु कमान-नियंत्रण प्रणाली (आईएसीसीएस) की मिसाल देते हुए कहा कि इसने भारतीय सेना के आकाशतीर और नौसेना के त्रिगुण के साथ मिलकर काम किया। जो अभियान के समय पर एक संयुक्त संचालन का आधार बन रही है।

राजनाथ ने बताया कि युद्ध का विकसित होता स्वरूप, पारंपरिक-गैर पारंपरिक खतरों के जटिल अंतर्संबंध के साथ संयुक्तता को एक विकल्प की जगह पर संचालन से जुड़ी हुई एक बड़ी आवश्यकता बनाता है। वर्तमान समय में ये हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा और संचालन की प्रभावशीलता के लिए एक मूलभूत आवश्यकता बन गई है। जहां हमारी तीनों सेनाओं स्वतंत्र रूप से कार्रवाई करने में दक्ष हैं। वहीं, जमीन, समुद्र, वायु, अंतरिक्ष और साइबर स्पेस की संबद्ध प्रकृति सहयोगात्मक शक्ति को विजय की सच्ची गारंटी बनाती है। उन्होंने आगाह करते हुए कहा कि विमानन सुरक्षा, साइबर युद्ध जैसे अहम क्षेत्रों में मानकों में भिन्नता विनाशकारी साबित हो सकती है। निरीक्षण में छोटी सी भी गलती व्यापक असर पैदा कर सकती है। अगर हमारी साइबर रक्षा प्रणालियां सभी सेनाओं में अलग-अलग हैं तो विरोधी इस अंतर का फायदा उठा सकते हैं। हमें अपने मानकों में सामंजस्य स्थापित करके इन कमजोरियों को दूर करना पड़ेगा। उन्होंने पीएम मोदी के हाल ही में कोलकाता में तीनों सेनाओं के संयुक्त कमांडर सम्मेलन को

संबोधित करते वक्त संयुक्तता व एकीकरण के महत्व पर दिए गए जोर वाली टिप्पणी को भी प्रमुखता से रेखांकित किया। साथ ही कहा कि इससे सरकार की मामले पर स्पष्ट प्रतिबद्धता प्रदर्शित होती है। जिसमें ये ध्यान दिया जा रहा है कि सशस्त्र बल न केवल मूल्यों और परंपराओं के मामले में दुनिया में सर्वश्रेष्ठ हों। बल्कि वो भविष्य के लिए तैयार प्रणालियों के अग्रदूत भी हों।

जम्मू-कश्मीर में अलगाववादियों पर फिर प्रहार... तहरीक-ए-हुर्रियत के मुख्यालय को कुर्क किया

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने तहरीक-ए-हुर्रियत के मुख्यालय को कुर्क किया है, जिसकी स्थापना अलगाववादी नेता सैयद अली शाह गिलानी ने 2004 में की थी। बीते साल बडगाम पुलिस स्टेशन में दर्ज एक प्राथमिकी में गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत आफिस को कुर्क किया गया है। पुलिस ने कहा कि अलगाववादी और आतंकवादी नेटवर्क के खिलाफ एक बड़ी कार्रवाई में, हैदरपुरा के रहमताबाद स्थित प्रतिबंधित संगठन तहरीक-ए-हुर्रियत के मुख्यालय को कुर्क कर लिया है। कुर्क की गई संपत्ति में एक तीन मंजिला इमारत शामिल है, जिसका इस्तेमाल प्रतिबंधित संगठन के कार्यालय के रूप में किया जाता था। तहरीक-ए-हुर्रियत की स्थापना गिलानी ने अपने मूल संगठन जमात-ए-इस्लामी से अलग होने के बाद की थी। 2023 में, केंद्र ने तहरीक-ए-हुर्रियत को एक गैरकानूनी संगठन घोषित कर प्रतिबंधित कर दिया था। संगठन का मुख्यालय हैदरपुरा के रहमताबाद स्थित गिलानी के आवास परिसर में स्थित था। गिलानी और तहरीक-ए-हुर्रियत प्रमुख मोहम्मद अशरफ सेहराई (जिनकी 2022 में जम्मू की एक जेल में मृत्यु हो गई) के निधन और 2023 में इस पर प्रतिबंध लगने के बाद, यह अलगाववादी संगठन लगभग निष्क्रिय हो गया था। संगठन का अधिकांश शीर्ष और दूसरी पंक्ति का नेतृत्व जेल में है। पूर्व निर्वाचित विधायक गिलानी (92) अपने निधन के समय एक दशक से भी अधिक समय से नजरबंद थे। पुलिस ने कहा, एकत्रित साक्ष्यों के आधार पर और सक्षम प्राधिकारी से उचित अनुमोदन प्राप्त करके, कानूनी प्रावधानों के अनुसार संपत्ति कुर्क की गई।

चिदंबरम के बयान से कांग्रेस में बवाल, राशिद अल्वी ने कहा, इससे बीजेपी को फायदा होगा

-बीजेपी का तंज सोनिया और राहुल गांधी जबाव दें

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व केंद्रीय मंत्री पी चिदंबरम के दावे पर कांग्रेस के अंदर बवाल मच गया है। कांग्रेस नेता राशिद अल्वी ने इस बयान को पार्टी को कमजोर करने वाला बताया। अल्वी ने कहा, क्या इसका मतलब है कि वे अमेरिकी दबाव में काम कर रहे थे? उनका यह बयान सिर्फ बीजेपी को फायदा देगा।

दरअसल, चिंदबरम ने दावा किया था कि 26/11 हमले के बाद भारत अमेरिका के दबाव में पाकिस्तान पर जवाबी कार्रवाई नहीं कर सका। साल 2008 में मुंबई में हमला हुआ, तब कांग्रेस नेता चिदंबरम केंद्रीय गृह मंत्री थे। उन्होंने इस बात का खुलासा किया कि तत्कालीन अमेरिकी विदेश मंत्री कोंडोलीजा राइस उनसे और प्रधानमंत्री मनमोहन से मिलने भारत आई थीं और उनसे स्थिति पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देने का अनुरोध किया था।

चिदंबरम का कहना था कि मेरे मन में बदला लेने का विचार आया था, लेकिन मनमोहन सरकार ने सैन्य कार्रवाई नहीं करने का फैसला किया। चिदंबरम ने कहा, पूरी दुनिया दिल्ली में यह कहने आई थी कि युद्ध मत शुरू कीजिए। उन्होंने आतंकी हमले के कुछ दिन बाद ही गृह मंत्री की जिम्मेदारी संभाली थी। मुंबई हमले में 175 लोगों की जान गई थी।

अब चिदंबरम के बयान पर कांग्रेस नेता अल्वी ने तीखी प्रतिक्रिया दी। अल्वी ने कहा, क्या इसका मतलब है कि वे अमेरिकी दबाव में काम कर रहे थे? ऐसा बयान केवल बीजेपी को फायदा देगा।

चिदंबरम अब 16 साल बाद यह दावा क्यों कर रहे हैं? अगर उस समय वे असहमत थे, तब उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए था। कांग्रेस के अंदर ही कई लोग हैं जो पार्टी को कमजोर करना चाहते हैं।

इसके पहले बीजेपी ने चिदंबरम के बयान पर तंज कसा था। बीजेपी सांसद रविशंकर प्रसाद ने मनमोहन सिंह सरकार को कमजोर करार देकर राहुल गांधी पर सवाल दागे थे। प्रसाद ने कहा, मनमोहन सिंह सरकार में गृह मंत्री रहे चिदंबरम ने अब खुद माना है कि मुंबई हमलों के बाद वे पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई के पक्ष में थे, लेकिन उस समय विदेश मंत्रालय ने उन्हें रोक दिया और पूर्व पीएम सिंह चुप रहे। उन्होंने तंज कसते हुए कहा, यह कितनी कमजोर सरकार थी, जब निर्दोष भारतीय मारे जा रहे थे।

संघ संस्थापक डॉ केशव बलिराम हेडगेवार को मरणोपरांत भारत रत्न देने की मांग

-बीजेपी अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी ने लिखी चिट्ठी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आरएसएस (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) के शताब्दी वर्ष में बीजेपी के सबसे बड़े मुस्लिम चेहरे ने संघ संस्थापक डॉ केशव बलिराम हेडगेवार को मरणोपरांत भारत रत्न देने की मांग कर दी है। बीजेपी अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी ने इस बारे में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को चिट्ठी लिखी है। अपनी चिट्ठी में सिद्दीकी ने डॉ हेडगेवार को स्वतंत्रता सेनानी और राष्ट्र-निर्माता बताया है। उन्होंने देश की सेवा और युवा पीढ़ी में देशभक्ति की भावना भरने में उनके योगदान का हवाला दिया है। संघ के शताब्दी समारोह के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया है।

बीजेपी अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सिद्दीकी ने कहा है, हेडगेवार के योगदानों-स्वतंत्रता संघर्ष में उनकी सक्रिय भागीदारी, राष्ट्र-निर्माण में उनके संगठनात्मक कौशल और एकजुट भारतीय समाज को लेकर उनके दृष्टिकोण को देखकर उन्हें भारत रत्न मिलना चाहिए। यह सम्मान न केवल उनके व्यक्तिगत बलिदानों को मान्यता देगा, बल्कि सभी स्वयंसेवकों को राष्ट्र के लिए अथक कार्य करने के लिए भी प्रेरित करेगा।

बात दें कि डॉ हेडगेवार का जन्म 1 अप्रैल, 1889 को नागपुर में हुआ था। उन्होंने 1925 में विजयादशमी के दिन नागपुर में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी। गुरुवार यानी 2 अक्टूबर, 2025 को इसकी स्थापना के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। संघ इन दिनों पूरे देश में अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रहा है। डॉ हेडगेवार संघ के संस्थापक सर संघचालक थे। मोहन भागवत आरएसएस के छठे सर संघचालक हैं।

आरएसएस के शताब्दी समारोह के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली के डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लिया है। इस मौके पर उन्होंने कहा है कि संघ के हर संगठन का भाव एक है-राष्ट्र प्रथम। उनका कहना है कि संघ का उद्देश्य व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण है। उन्होंने कहा कि संघ खुद भी तपता है और दूसरों को भी तपाता है।... संघ का एकमात्र लक्ष्य है.....एक भारत, श्रेष्ठ भारत। इस मौके पर पीएम मोदी ने आरएसएस के शताब्दी वर्ष के मौके पर एक विशेष डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया।

सांस्कृतिक-सामाजिक संगठन है आरएसएस

पीएम मोदी ने कहा कि परम पूज्य हेडगेवारजी ने 1925 में विजयादशमी के मौके पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। हेडगेवार के देहांत के बाद गुरुजी ने राष्ट्र सेवा के महान अभियान को आगे बढ़ाया। बता दें कि आरएसएस खुद को एक सांस्कृतिक-

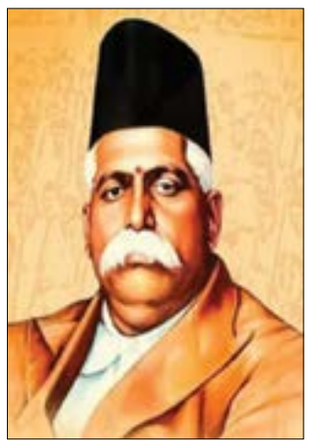

सामाजिक संगठन बताता है, जिसके स्वयंसेवकों का लक्ष्य समाज में सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाना और नागरिकों में अनुशासन, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना जगाना है।

एनसीआरबी की ताजा रिपोर्ट में खुलासा, ओडिशा में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में बढ़ोत्तरी हुई

भुवनेश्वर (एजेंसी)। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की ताजा रिपोर्ट, क्राइम इन इंडिया 2023 ने ओडिशा में महिलाओं के खिलाफ अपराधों की बिगड़ती प्रवृत्ति का खुलासा हुआ है। 2023 में विभिन्न पुलिस थानों में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 25,914 मामले दर्ज हुए हैं, जो देश में छठा सबसे अधिक है। एनसीआरबी 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, ओडिशा में महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध के 761 मामले दर्ज हुए, जो सबसे ज्यादा हैं। इसमें अश्लील कंटेंट भेजना, ब्लैकमेलिंग, मानहानि, फोटो के साथ छेड़छाड़ और फर्जी प्रोफाइल बनाना शामिल है। एनसीआरबी की रिपोर्ट में इसका खुलासा हुआ है कि 1195 मामलों के साथ, ओडिशा उन शीर्ष 10 राज्यों में शामिल है (सातवें स्थान पर) है। 2023 में ओडिशा और कर्नाटक में पोर्नोग्राफी के लिए बच्चों के इस्तेमाल और बाल पोर्नोग्राफी सामग्री के भंडारण से संबंधित 30 मामले दर्ज किए गए, जो देश में चौथे सबसे अधिक मामले हैं। ओडिशा में महिलाओं की इज्जत को ठेस पहुंचाने के इरादे से हमले के 9,367 मामले दर्ज हुए, जो देश में चौथा सबसे बड़ा आंकड़ा है। इस श्रेणी में ओडिशा की अपराध दर (40.6) देश में सबसे अधिक है। इसके अलावा, ओडिशा में 2023 में महिलाओं के अपहरण और अगवा करने के 5,611 मामले दर्ज किए गए। इस श्रेणी में ओडिशा देश में सातवें स्थान पर है, लेकिन अपराध दर (24.3) के मामले में दिल्ली (39.5) के बाद दूसरा सबसे ऊंचा है।

अनुसूचित जनजाति के लोगों के खिलाफ 29 प्रतिशत बढ़े अपराध, देश में दूसरे नंबर पर मध्य प्रदेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। अनुसूचित जनजाति के कल्याण और उनके हक के लिए ताल ठोंककर दावा करने वाली सरकारों के लिए ये चौंकाने वाली रिपोर्ट है। अनुसूचित जनजाति के खिलाफ पूरे देश में करीब 29 प्रतिशत अपराध बढ़े हैं। जिन राज्यों में सर्वाधिक जुल्म और अत्याचार हुए हैं उसमें मणिपुर पहले और मध्य प्रदेश दूसरे नंबर पर है।

एनसीआरबी की रिपोर्ट में कहा गया है कि मणिपुर इस मामले में सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य है, जहां मई 2023 से मैतेई और कुकी-जो समुदायों के बीच जातीय हिंसा की आग अभी भी सुलग रही है। रिपोर्ट के मुताबिक, वहां एसटी समुदाय के खिलाफ 3,399 मामले दर्ज किए गए हैं, जबकि 2022 में ऐसे मामलों की संख्या सिर्फ एक थी और 2021 में कोई मामला दर्ज नहीं किया गया था। राज्यवार आंकड़ों की बात करें तो मणिपुर के बाद मध्य प्रदेश का स्थान दूसरे नंबर

पर है। जहां एसटी समुदाय के खिलाफ अपराध के 2,858 मामले दर्ज किए गए हैं।

आजादी के 78 सालों बाद भी देश के सबसे दबे-कुचले समुदाय के लोगों के खिलाफ अपराध के मामले कम होने का नाम नहीं ले रहे बल्कि उसकी संख्या में और इजाफा हो रहा है। इस बात की तस्दीक राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) ने की है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, देशभर में अनुसूचित जनजाति समुदाय के लोगों के खिलाफ अपराध के मामलों में करीब 29 फीसदी की बढ़ोत्तरी हुई है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2023 की तुलना में 2024 में अनुसूचित जनजातियों के खिलाफ अपराध के मामलों में 28.8 फीसदी की वृद्धि हुई है। 2024 में एसटी समुदाय के खिलाफ देश भर में कुल 12,960 मामले दर्ज किए गए हैं, जबकि 2022 में यह संख्या 10,064 थी। राज्यवार आंकड़ों की बात करें तो मणिपुर के बाद मध्य प्रदेश का स्थान दूसरे नंबर पर है। जहां एसटी समुदाय के खिलाफ अपराध के 2,858 मामले दर्ज किए गए हैं। 2022 में यह संख्या 2,979 और 2021 में 2,627 थी। इसके बाद तीसरे स्थान पर राजस्थान है, जहाँ 2023 में ऐसे 2,453 मामले दर्ज किए गए, जो 2022 के 2,521 मामलों से कम है, लेकिन 2021 में दर्ज 2,121 मामलों से अधिक है।

महबूबा मुफ्ती ने भाजपा सरकार पर साधा निशाना, बोलीं- कश्मीरियों को बंदूक की नोक पर राष्ट्रगान पर खड़े होने को किया जा रहा मजबूर

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार कश्मीर में लोगों को जबरन राष्ट्रगान के लिए खड़ा करवा रही है। उन्होंने दावा किया कि श्रीनगर में राष्ट्रगान के दौरान खड़े न होने पर 15 युवकों को हिरासत में लिया गया है।

महबूबा ने कहा, कि कश्मीर में लोगों को बंदूक की नोक पर राष्ट्रगान के लिए मजबूर किया जा रहा है। जब मैं छात्रा थी, तो हम अपनी इच्छा से राष्ट्रगान के सम्मान में खड़े होते थे। लेकिन अब यह दबाव डालकर करवाया जा रहा है। यह सरकार की विफलता है। दरअसल, 30 सितंबर की शाम श्रीनगर के टीआरसी फुटबॉल मैदान में राष्ट्रगान का आयोजन हुआ था। इस दौरान 15 युवक खड़े नहीं हुए, जिसके बाद पुलिस ने उन्हें

हिरासत में लिया। इस कार्रवाई की महबूबा मुफ्ती ने कड़ी आलोचना की है।

खेल मैदानों को लेकर भी जताई नाराजगी

महबूबा ने बुधवार को मुस्लिम एजुकेशनल ट्रस्ट स्कूल के मैदान का दौरा किया और आरोप लगाया कि पुलिस इस मैदान पर शहीद स्मारक बनाने की योजना बना रही है। उन्होंने कहा, यह कदम युवाओं से खेल का मैदान छीनने जैसा है। हमारे खेल के मैदान धीरे-धीरे गायब किए जा रहे हैं। मैं डीजीपी से अपील करती हूं कि इस मैदान को बचाया जाए। इसके अलावा उन्होंने चट्टाबल इलाके के डेयरी फार्म मैदान का भी दौरा किया। यहां उन्होंने कहा कि यह मैदान दशकों से खेलों के लिए इस्तेमाल होता रहा है और स्थानीय लोग इसे बचाने की मांग कर रहे हैं। मुफ्ती ने याद दिलाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी पुलवामा की नाइट क्रिकेट प्रतियोगिता की सराहना की थी, ऐसे में सेना को भी चाहिए कि यह मैदान युवाओं से न छीना जाए।

महबूबा मुफ्ती ने चेतावनी दी कि अगर युवाओं से खेल और सार्वजनिक स्थान छीने गए, तो असंतोष और बढ़ेगा। उन्होंने कहा, पुलिस हमारी रक्षक है। शहीदों का स्मारक कहीं और भी बनाया जा सकता है। जम्मू-कश्मीर में ऐसी जगहों की कोई कमी नहीं है।

मानसून विदाई को गलत साबित कर रही दिल्ली और राजस्थान की भारी बारिश

-जयपुर में रावण के पुतले बहे, दिल्ली में जलभराव और जाम से लोग होते रहे परेशान

नई दिल्ली (एजेंसी)। कहने को देशभर में मंगलवार को ही आधिकारिक रूप से मानसून का समापन हो गया, लेकिन बारिश का दौर थमने का नाम नहीं ले रहा है। जयपुर और आसपास के इलाकों में मंगलवार को महज दो घंटे की तेज बारिश ने हालात बिगाड़ के रख दिए। कई इलाकों में 2 से 3 फीट तक पानी भर गया और दशहरा उत्सव के लिए तैयार रावण के पुतले बहते नजर आए। आज भी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। इस मानसून देशभर में सामान्य से 8 प्रतिशत अधिक बारिश हो चुकी है।

यहां दिल्ली में भी मौसम विभाग का पूर्वानुमान गलत साबित होता हुआ दिखा। दरअसल मंगलवार को दिल्ली में मौसम ने अचानक करवट ली और दिनभर तेज वर्षा हुई, जिससे जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। जलभराव और जगह-जगह जाम से लोग परेशान होते रहे। इस बारिश ने गर्मी से राहत तो दिलाई लेकिन लोगों को परेशानी भी खूब हुई। यहां बुधवार और गुरुवार को भी वर्षा का अनुमान है। वहीं मानसून विदाई के बावजूद राजस्थान में हो रही बारिश सभी को हैरान कर रही है। यहां कोटा में 221 फीट ऊंचा रावण का पुतला बारिश में भीग गया। दावा है कि यह दुनिया का सबसे ऊंचा रावण का पुतला है। मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि दशहरे के दिन यानी 2 अक्टूबर को भी राजस्थान में तेज बारिश हो सकती है।

भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) के अनुसार, इस बार जून से सितंबर तक के मानसून सीजन में देशभर में सामान्य से 8प्रतिशत ज्यादा बारिश हुई। औसतन 868.6 मिमी वर्षा होती है, जबकि इस साल 937.2 मिमी दर्ज की गई। इस मानसूनी बारिश ने हालांकि खुशहाली के साथ-साथ तबाही लाने का भी काम किया है। आंकड़ों के अनुसार, इस मानसून में मौसम से जुड़ी घटनाओं से करीब 1520 लोगों की जान चली गई। इनमें से 935 मौतें बाढ़ और भारी बारिश से हुईं, जबकि 570 लोगों की मौत बिजली गिरने और आंधी-तूफान की वजह से हुईं। आईएमडी ने यह भी बताया कि अक्टूबर से दिसंबर तक बारिश का दौर जारी रहेगा। अक्टूबर में सामान्य से 15 प्रतिशत ज्यादा वर्षा होने का अनुमान है। दक्षिणी राज्यों तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल और कर्नाटक में भी मानसून के बाद सामान्य से अधिक बारिश की संभावना है।

दिल्ली में बादल और हल्की बारिश की संभावना

राजधानी दिल्ली में बुधवार को न्यूनतम तापमान 22.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से थोड़ा कम है। पिछले 24 घंटों में दिल्ली में 38 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई। मौसम विभाग ने अनुमान जताया है कि आज दिनभर बादल छाए रहेंगे और कहीं-कहीं हल्की बारिश या बूंदाबांदी हो सकती है।

उत्तर प्रदेश में बारिश और हादसे

उत्तर प्रदेश के वाराणसी, जौनपुर और कानपुर सहित 36 जिलों में बुधवार को बारिश का अलर्ट है। वाराणसी में मंगलवार शाम से शुरू हुई बारिश रातभर जारी रही और बुधवार सुबह तक करीब 60 मिमी वर्षा रिकॉर्ड की गई। लगातार बारिश से लोटा टीला

मठ की दीवार गिर गई। जालौन में आकाशीय बिजली गिरने से 100 साल पुराना शिव मंदिर ढह गया। वहीं फतेहपुर में बिजली गिरने से छह लोगों की मौत हो गई।

इस तरह से भले ही मानसून का आधिकारिक समापन हो गया, लेकिन देश के कई हिस्सों में बारिश का सिलसिला अभी थमने का नाम नहीं ले रहा है। ऐसे में प्रशासन और आम जनता दोनों को सतर्क रहने की जरूरत है ताकि मौसम से होने वाले हादसों की पुनरावृत्ति रोकी जा सके।

इंदौर मेट्रो रेल परियोजना के लिए एडीबी ने 1,580 करोड़ ऋण को दी मंजूरी

इंदौर (ईएमएस)। इंदौर में मेट्रो रेल का काम अब तेजी से आगे बढ़ेगा। एशिया के सबसे बड़े बैंक एशियाई विकास बैंक (अऊ) ने इंदौर मेट्रो के लिए 190 मिलियन डॉलर (लगभग 1,580 करोड़ रुपये) का बड़ा कर्ज मंजूर कर दिया है। यह पैसा खास तौर पर इंदौर की शहरी व्यवस्था सुधारने, प्रदूषण कम करने और शहर के विकास में सभी को साथ लेकर चलने के लिए दिया गया है।

भीड़भाड़ वाले इलाकों से एयरपोर्ट तक मेट्रो

इस कर्ज से 8.62 किलोमीटर लंबी भूमिगत मेट्रो लाइन बनेगी, जिसमें सात स्टेशन होंगे। यह लाइन इंदौर के भीड़भाड़ वाले इलाकों को सीधे हवाई अड्डे से जोड़ देगी, जिससे लोगों को जाम से मुक्ति मिलेगी। एडीबी के एक अधिकारी, मियो ओका ने बताया कि यह प्रोजेक्ट केवल परिवहन को आधुनिक नहीं बनाएगा, बल्कि इससे महिलाओं और गरीब तबके के लोगों को नौकरी और अपना काम शुरू करने के मौके मिलेंगे। मेट्रो स्टेशनों को इस तरह बनाया जाएगा कि बुजुर्गों, बच्चों और दिव्यांगों को कोई परेशानी न हो। इसके लिए लिफ्ट, रैंप और सीसीटीवी कैमरे जैसी सुविधाएँ होंगी।

पर्यावरण को मिलेगी राहत

यह नई मेट्रो लाइन पर्यावरण के लिए वरदान साबित होगी। अंदाज़ा है कि इससे हर साल 12,414 टन कार्बन डाइऑक्साइड (प्रदूषण वाली गैस) कम होगी, जिससे इंदौर की हवा साफ होगी। अच्छी बात यह भी है कि मेट्रो स्टेशनों पर कुछ दुकानें महिला उद्यमियों और स्व-सहायता समूहों को दी जाएंगी, ताकि वे भी पैसा कमा सकें। मध्यप्रदेश मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (टढटफछछ) इस प्रोजेक्ट को पूर्ण करेगा और उम्मीद है कि जनवरी 2030 तक सम्पूर्ण ट्रेक पर मेट्रो चलना शुरू हो जाएगी

(पेज 1 का शेष समाचार) आरएसएस के स्वयंसेवक राष्ट्र की सेवा और समाज को सशक्त...

आदर्श डॉ. हेडगेवार के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने घोषणा की कि संघ की गौरवशाली 100 वर्ष की यात्रा के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने एक विशेष डाक टिकट और स्मारक सिक्का जारी किया है। 100 रुपये के इस सिक्के पर एक ओर राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न तो दूसरी तरफ सिंह के साथ वरद मुद्रा में भारत माता की भव्य छवि अंकित है, जिन्हें स्वयंसेवकों द्वारा नमन किया जा रहा है। श्री मोदी ने रेखांकित किया कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में संभवतः यह पहली बार है, जब भारत माता की छवि भारतीय मुद्रा पर दिखाई दी है। उन्होंने कहा कि सिक्के पर संघ का मार्गदर्शक आदर्श वाक्य- राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय, इदं न मम भी अंकित है। आज जारी किए गए स्मारक डाक टिकट के महत्व और इसकी असीम ऐतिहासिक प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री ने 26 जनवरी के गणतंत्र दिवस परेड के महत्व को याद किया और इस बात पर प्रकाश डाला कि 1963 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने देशभक्ति की धुनों पर ताल से ताल मिलाते हुए बड़े गर्व के साथ परेड में भाग लिया था। उन्होंने कहा कि यह डाक टिकट उस ऐतिहासिक क्षण की स्मृति को समेटे हुए है। पीएम मोदी ने इन स्मारक सिक्कों और डाक टिकट के जारी होने पर देशवासियों को हार्दिक बधाई देते हुए कहा, यह स्मारक डाक टिकट राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों के अटूट समर्पण को भी दर्शाता है, जो राष्ट्र की सेवा और समाज को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जिस प्रकार महान नदियां अपने तटों पर मानव सभ्यताओं का पोषण करती हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी असंख्य लोगों को पोषित और समृद्ध किया है। एक नदी जो अपनी निकटस्थ भूमि, गांवों और क्षेत्रों को पल्लवित और पोषित करते हुए बहती है और संघ, जिसने भारतीय समाज के हर कार्यक्षेत्र और राष्ट्र के हर क्षेत्र को छुआ है, के बीच तुलना करते हुए, श्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि यह निरंतर समर्पण और एक शक्तिशाली राष्ट्रीय धारा का परिणाम है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और एक नदी की तुलना करते हुए, जो अनेक धाराओं में विभाजित होकर अलग-अलग क्षेत्रों को पोषित करती है, प्रधानमंत्री ने कहा कि संघ की यात्रा इसी का प्रतिबिंब है, जहां इसके विभिन्न सहयोगी संगठन जीवन के सभी पहलुओं- शिक्षा, कृषि, समाज कल्याण, जनजातीय उत्थान, महिला सशक्तिकरण, कला और विज्ञान तथा श्रम सेक्टर में राष्ट्र सेवा में संलग्न हैं। श्री मोदी ने रेखांकित किया कि संघ के अनेक धाराओं में विस्तार के बावजूद उनमें कभी विभाजन नहीं हुआ।

प्रधानमंत्री ने कहा, ₹प्रत्येक धारा, विविध क्षेत्रों में कार्यरत प्रत्येक संगठन, एक ही उद्देश्य और भावनाः राष्ट्र प्रथम को साझा करता है।₹

श्री मोदी ने कहा, ₹अपनी स्थापना के समय से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने महान उद्देश्य- राष्ट्र निर्माण को अपनाया है।₹ उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ ने राष्ट्रीय विकास की नींव के रूप में वैयक्तिक विकास का मार्ग चुना है। इस मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने के लिए संघ ने एक अनुशासित कार्य पद्धतिः शाखाओं का दैनिक और नियमित संचालन अपनाई है।

प्रधानमंत्री ने कहा, ₹पूज्य डॉ. हेडगेवार समझते थे कि राष्ट्र तभी वास्तविक रूप से सशक्त होगा जब प्रत्येक नागरिक अपने दायित्व के प्रति जागरूक होगा; भारत तभी उन्नति करेगा जब प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के लिए जीना सीखेगा।₹ उन्होंने कहा कि इसीलिए डॉ. हेडगेवार अद्वितीय दृष्टिकोण अपनाते हुए लोगों के विकास के लिए प्रतिबद्ध रहे। श्री मोदी ने डॉ. हेडगेवार के मार्गदर्शक सिद्धांत को उद्धृत कियाः ₹लोगों को वैसे ही स्वीकार करो जैसे वे हैं, उन्हें वैसा बनाओ, जैसा उन्हें होना चाहिए।₹ उन्होंने डॉ. हेडगेवार के जन-सम्पर्क के तरीके की तुलना एक कुम्हार से की, जो साधारण मिट्टी से शुरुआत करता है, उस पर लगन से काम करता है, उसे आकार देता है, पकाता है और अंततः ईंटों का उपयोग करके एक भव्य संरचना का निर्माण करता है। उसी तरह डॉ. हेडगेवार ने सामान्य व्यक्तियों का चयन किया, उन्हें प्रशिक्षित किया, दूरदृष्टि प्रदान की और राष्ट्र के लिए समर्पित स्वयंसेवकों के रूप में आकार दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि इसीलिए संघ के बारे में कहा जाता है कि वहां सामान्य लोग असाधारण और अभूतपूर्व कार्यों को पूरा करने के लिए एकजुट होते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में वैयक्तिक विकास की महान प्रक्रिया के निरंतर फलने-फूलने पर प्रकाश डालते हुए, श्री मोदी ने शाखा स्थल को प्रेरणा का एक पवित्र स्थल बताया, जहां एक स्वयंसेवक सामूहिक भावना का प्रतिनिधित्व करते हुए ₹मैं₹ से ₹हम₹ की ओर अपनी यात्रा आरंभ करता है। उन्होंने कहा कि ये शाखाएं चरित्र निर्माण की यज्ञ वेदी हैं, जो शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देती हैं। प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि शाखाओं के भीतर, राष्ट्र सेवा की भावना और साहस की जड़ें पनपती हैं, त्याग और समर्पण स्वाभाविक हो जाते हैं, व्यक्तिगत श्रेय की लालसा कम हो जाती है और स्वयंसेवक सामूहिक निर्णय लेने और टीमवर्क के मूल्यों को आत्मसात कर लेते हैं। इस बात पर बल देते हुए कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्ष की यात्रा तीन आधारभूत स्तंभों- राष्ट्र निर्माण की भव्य परिकल्पना, वैयक्तिक विकास का स्पष्ट मार्ग और शाखाओं के रूप में सरल किन्तु गतिशील कार्य पद्धति- पर आधारित रही है। श्री मोदी ने कहा कि इन स्तंभों के आधार पर संघ ने लाखों स्वयंसेवकों को तैयार किया है, जो समर्पण, सेवा और राष्ट्रीय उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्ध प्रयास के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र को आगे बढ़ा रहे हैं।

श्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि अपनी स्थापना के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी प्राथमिकताओं को राष्ट्र की प्राथमिकताओं के साथ संयोजित किया है। उन्होंने कहा कि हर युग में संघ ने देश के सामने आने वाली बड़ी चुनौतियों का डटकर सामना किया है। स्वतंत्रता संग्राम का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि पूज्य डॉ. हेडगेवार और कई अन्य कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था और डॉ. हेडगेवार को कई बार कारावास भी भुगतना पड़ा था। प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि संघ ने अनेक स्वतंत्रता सेनानियों की सहायता की और उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। उन्होंने चिमूर में 1942 के आंदोलन का उदाहरण दिया, जहां कई स्वयंसेवकों ने ब्रिटिश शासन के भीषण अत्याचार सहे थे। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के बाद भी संघ ने हैदराबाद में निजाम के उत्पीड़न का विरोध करने से लेकर गोवा और दादरा एवं नगर हवेली की मुक्ति में योगदान देने तक- बलिदान देना जारी रखा। पूरे आंदोलन में संघ की मूल भावना ₹राष्ट्र प्रथम₹ रही और उसका अटल लक्ष्य ₹एक भारत, श्रेष्ठ भारत₹ रहा।

इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को राष्ट्रसेवा की अपनी यात्रा में अनेक आक्रमणों और षड्यंत्रों का सामना करना पड़ा है, श्री मोदी ने स्मरण किया कि कैसे स्वतंत्रता के बाद भी संघ को दबाने और उसे मुख्यधारा में शामिल होने से रोकने के प्रयास किए गए। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि पूज्य गुरुजी को झूठे मामलों में फंसाकर जेल भेज दिया गया था। फिर भी रिहा होने पर गुरुजी ने अत्यंत धैर्य के साथ कहा, ₹कभी-कभी जीभ दांतों तले फंस जाती है और कुचल जाती है। लेकिन हम दांत नहीं तोड़ते, क्योंकि दांत और जीभ दोनों हमारी हैं।₹ प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि कठोर यातनाएं और विभिन्न प्रकार के उत्पीड़न सहने के बावजूद गुरुजी ने किसी के प्रति कोई द्वेष या दुर्भावना नहीं रखी। उन्होंने गुरुजी के ऋषितुल्य व्यक्तित्व और वैचारिक स्पष्टता को प्रत्येक स्वयंसेवक के लिए एक मार्गदर्शक बताया, जो समाज के प्रति एकता और सहानुभूति के मूल्यों को सुदृढ़ करता है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि चाहे प्रतिबंधों, षड्यंत्रों या झूठे मुकदमों का सामना करना पड़ा हो, स्वयंसेवकों ने कभी कटुता को स्थान नहीं दिया, क्योंकि वे समझते थे कि वे समाज से अलग नहीं हैं - समाज उनसे बना है, जो अच्छा है वह उनका है और जो कम अच्छा है, वह भी उनका ही है।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल दिया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कभी भी कटुता नहीं रखी, इसका एक प्रमुख कारण लोकतंत्र और संवैधानिक संस्थाओं में प्रत्येक स्वयंसेवक की अटूट आस्था है। उन्होंने आपातकाल के दौरान स्वयंसेवकों को सशक्त और प्रतिरोध करने की शक्ति प्रदान करने का स्मरण किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि समाज के साथ एकता और संवैधानिक संस्थाओं में आस्था, इन दो मूलभूत मूल्यों ने स्वयंसेवकों को हर संकट में धैर्यवान और सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाए रखा है। समय के साथ अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए भी संघ एक विशाल वटवृक्ष की तरह अडिग रहकर राष्ट्र और समाज की निरंतर सेवा करता रहा है।

श्री मोदी ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी स्थापना के समय से ही देशभक्ति और सेवा का पर्याय रहा है। उन्होंने याद दिलाया कि विभाजन के कष्टदायक दौर में, जब लाखों परिवार विस्थापित हुए थे, स्वयंसेवक सीमित संसाधनों के बावजूद शरणार्थियों की सेवा में सबसे आगे खड़े रहे। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि यह केवल राहत कार्य नहीं था, बल्कि राष्ट्र की आत्मा को सुदृढ़ करने का कार्य था।

प्रधानमंत्री ने 1956 में गुजरात के अंजार में आए विनाशकारी भूकंप का भी उल्लेख किया और व्यापक विनाश का वर्णन किया। उस समय भी स्वयंसेवक राहत और बचाव कार्यों में सक्रिय रूप से लगे हुए थे। उन्होंने बताया कि पूज्य गुरुजी ने गुजरात में संघ के तत्कालीन प्रमुख वकील साहब को एक पत्र लिखा था, जिसमें उन्होंने कहा था कि दूसरों के दुख दूर करने के लिए निःस्वार्थ भाव से कष्ट सहना, एक नेक हृदय का प्रतीक है।

श्री मोदी ने 1962 के युद्ध को याद करते हुए कहा, ₹दूसरों के दुखों को दूर करने के लिए कष्ट सहना प्रत्येक स्वयंसेवक की पहचान है।₹ उन्होंने कहा कि उस युद्ध में आरएसएस के स्वयंसेवकों ने सशस्त्र बलों की अथक सहायता की, उनका मनोबल बढ़ाया और सीमावर्ती गांवों तक सहायता पहुंचाई। प्रधानमंत्री ने 1971 के संकट का भी उल्लेख किया, जब पूर्वी पाकिस्तान से लाखों शरणार्थी बिना किसी आश्रय या संसाधन के भारत पहुंचे थे। उस कठिन समय में स्वयंसेवकों ने भोजन की व्यवस्था की, आश्रय प्रदान किया, स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कीं, उनके आंसू पोंछे और उनके दर्द को साझा किया। श्री मोदी ने कहा कि स्वयंसेवकों ने 1984 के दंगों के दौरान भी कई सिखों को शरण दी थी।

यह स्मरण करते हुए कि पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम चित्रकूट में नानाजी देशमुख के आश्रम में होने वाले सेवा कार्यकलापों से बहुत हतप्रभ थे। श्री मोदी ने यह भी उल्लेख किया कि पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी भी नागपुर की अपनी यात्रा के दौरान संघ के अनुशासन और सादगी से बहुत प्रभावित हुए थे।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि आज भी, पंजाब में बाढ़, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में आई आपदाओं और केरल के वायनाड में हुई त्रासदी जैसी आपदाओं में, स्वयंसेवक सबसे पहले सहायता पहुंचाने वालों में से हैं। उन्होंने कहा कि कोविड-19 महामारी के दौरान, पूरे विश्व ने संघ के साहस और सेवा भावना को प्रत्यक्ष रूप से देखा।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल देते हुए कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्षों की यात्रा में उसका एक सबसे महत्वपूर्ण योगदान समाज के विभिन्न वर्गों में आत्म-जागरूकता और गौरव का संचार करना रहा है, कहा कि संघ ने देश के सबसे दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में विशेष रूप से देश के लगभग दस करोड़ जनजातीय भाइयों और बहनों के बीच, निरंतर कार्य किया है। जहां एक ओर सरकारें अक्सर इन समुदायों की उपेक्षा करती रहीं, वहीं संघ ने उनकी संस्कृति, त्योहारों, भाषाओं और परंपराओं को प्राथमिकता दी। सेवा भारती, विद्या भारती और वनवासी कल्याण आश्रम जैसे संगठन जनजातीय सशक्तिकरण के स्तंभ बनकर उभरे हैं। श्री मोदी ने कहा कि आज जनजातीय समुदायों में बढ़ता आत्मविश्वास उनके जीवन में बदलाव ला रहा है।

देश के सुदूर इलाकों में जनजातीय समुदायों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए अथक परिश्रम कर रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लाखों स्वयंसेवकों की भरपूर सराहना करते हुए, श्री मोदी ने कहा कि उनके समर्पण ने राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रधानमंत्री ने उन चुनौतियों और शोषणकारी अभियानों का उल्लेख किया, जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से जनजातीय क्षेत्रों को निशाना बनाया और इस बात पर जोर दिया कि संघ ने चुपचाप और दृढ़ता से अपना बलिदान दिया है और दशकों से राष्ट्र को ऐसे संकटों से बचाने के लिए अपना कर्तव्य निभाया है।

अरबपतियों का नया हब बन रहा भारत...

■ 9.55 लाख करोड़ के साथ मुकेश अंबानी का परिवार सबसे अमीर...अरबपति क्लब में पहली बार शामिल हुए शाहरुख खान ■ भारत के 1687 लोगों के पास देश की आधी संपत्ति

मुंबई(ईएमएस)। भारत अब अरबपतियों का नया हब बनता जा रहा और देश में अमीरों की तादाद में साल-दर-साल जोरदार इजाफा हो रहा है।एम3एम हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2025 जारी कर दी गई है और इसके मुताबिक, इस बार लिस्ट में 1,687 व्यक्तियों को शामिल किया गया। सभी अमीरों की कुल संपत्ति 167 लाख करोड़ रुपए है, जो भारत के जीडीपी का लगभग आधा है। वहीं सबसे रईसों की रैंकिंग में एक बार फिर मुकेश अंबानी का दबदबा दिखा है। मुकेश अंबानी और उनका परिवार 9.55 लाख करोड़ रुपए की संपत्ति के साथ टॉप पर हैं। गौतम अडाणी और उनका परिवार 8.15 लाख करोड़ रुपए की संपत्ति के साथ दूसरे स्थान पर हैं। खास बात ये है कि बॉलीवुड के किंग खान शाहरुख खान पहली बार बिलेनियर्स क्लब में शामिल हुए हैं। भारत में नए अरबपतियों की संख्या तेजी से बढ़ी है और ये इजाफा लगातार जारी है। अब भारत में 350 से ज्यादा अरबपति हो चुके हैं और ये आंकड़ा बीते 13 साल में छह गुना से ज्यादा बढ़ गया है। बता दें कि हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2025 में शामिल किए गए अरबपतियों की कुल संपत्ति 167 लाख करोड़ रुपये हो गई है, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग आधा है.

ये हैं देश के टॉप-3 अरबपति

हुरुन इंडिया रिच लिस्ट-2025 के अनुसार, रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी और उनके परिवार की कुल नेटवर्थ 9.55 लाख करोड़ रुपये आंकी गई है और संपत्ति के इस आंकड़े के साथ उन्हें फिर से भारत के सबसे अमीर व्यक्ति का खिताब हासिल हुआ है। वहीं दौलत के मामले में गौतम अडानी एंड फैमिली 8.15 लाख करोड़ रुपये की संपत्ति के साथ दूसरे स्थान पर है। लिस्ट में तीसरे नंबर पर रोशनी नादर मल्होत्रा को रखा गया है, जिनकी संपत्ति 2.84 लाख करोड़ रुपये है। बता दें कि वे इस सूची में अब तक की सर्वोच्च रैंकिंग वाली महिला अरबपति बन गई हैं और पहली बार टॉप-3 में एंट्री लेते हुए भारत की सबसे अमीर महिला के रूप में इतिहास रच दिया है।

अमीरों की इस लिस्ट में शाहरुख खान की एंट्री

अमीरों की 2025 लिस्ट में पेरप्लेक्सिटी के फाउंडर 31 साल के अरविंद श्रीनिवास 21,190 करोड़ रुपये की नेटवर्थ के साथ भारत के सबसे युवा अरबपति बन गए हैं। वहीं दूसरी ओर बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान भी पहली बार इस लिस्ट में आए हैं और 12,490 करोड़ रुपये की संपत्ति के साथ भारत के टॉप अरबपतियों के क्लब में शामिल हो गए हैं। पेटीएम के संस्थापक विजय शेखर शर्मा फिर से अरबपति बन गए हैं। भारत में इस साल 13 नए अरबपति जुड़े, जिससे अरबपतियों की संख्या 284 हो गई।

मुंबई से सबसे अधिक 451 लोग इस सूची में शामिल

इस बार 1,687 व्यक्तियों को शामिल किया गया, जिनकी संपत्ति 1,000 करोड़ रुपए से अधिक है। इनमें 284 नए नाम हैं। मुंबई से सबसे अधिक 451 लोग इस लिस्ट में शामिल हुए, इसके बाद दिल्ली (223) और बेंगलुरु (116)। 101 महिलाएं भी इस लिस्ट में शामिल हैं।

देश के अमीर लोगों में मुकेश अंबानी टॉप पर :-

फैमिली/पर्सन संपत्ति एक साल में संपत्ति कितनी बढ़ी या घटी मुकेश अंबानी फैमिली 9,55,410 करोड़ -6 प्रतिशत, गौतम अडाणी परिवार 8,14,720 करोड़ -30 प्रतिशत, शनी नाडर मल्होत्रा फैमिली 2,84,120 करोड़ नई एंट्री, सायरस पूनावाला फैमिली 2,46,460 करोड़ -15 प्रतिशत, कुमार मंगलम बिड़ला फैमिली 2,32,850 करोड़ -1 प्रतिशत, नीरज बजाज फैमिली 2,32,680 करोड़ +43 प्रतिशत , दिलीप संघवी 2,30,560 करोड़ -8 प्रतिशत, अजीम प्रेमजी फैमिली 2,21,250 करोड़ +16 प्रतिशत, गोपीचंद हिंदूजा फैमिली 1,85,310 करोड़ -4 प्रतिशत, राधाकिशन दमानी फैमिली 1,82,980 करोड़ -4 प्रतिशत।

दिवाली-दशहरा से पहले केंद्रीय कर्मचारियों को मिलेगा 3 प्रतिशत महंगाई भत्ता का लाभ

नई दिल्ली,(ईएमएस)। दिवाली-दशहरा से पहले केंद्रीय कर्मचारियों को कैबिनेट ने महंगाई भत्ता में (डीए बढ़ोत्तरी) 3 फीसदी की बढ़ोतरी की मंजूरी दे दी है। कैबिनेट ने केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के लिए महंगाई भत्ते में 3 प्रतिशत की बढ़ोतरी का ऐलान किया। इसके साथ ही अब कर्मचारियों का महंगाई भत्ता 55 से बढ़कर 58 प्रतिशत हो गया है। यह बढ़ोतरी 1 जुलाई, 2025 से प्रभावी होगा। कर्मचारियों को जुलाई, अगस्त और सितंबर का बकाया दिवाली से ठीक पहले अक्टूबर के वेतन के साथ मिलेगा। इसका मतलब है कि कर्मचारियों की सैलरी में तगड़ी बढ़ोतरी होगी। यह बढ़ोतरी सातवें वेतन आयोग के तहत आने वाले सभी केंद्र सरकार के कर्मचारियों के साथ-साथ पेंशनर्स और फैमिली पेंशनर्स पर भी लागू होगी। अगर किसी की केंद्रीय कर्मचारी की बेसिक सैलरी 30,000 है, तब कर्मचारी को प्रति माह 900 अतिरिक्त मिलने हैं, जबकि 40,000 वेतन वाले कर्मचारी को 1,200 अतिरिक्त मिलने है। तीन महीनों में, बकाया राशि कुल 2,700 से 3,600 होगी। यह त्यौहारों के समय में एक बड़ी राहत होगी। कैबिनेट के इस फैसले के बाद महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी का तोहफा सभी केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनर्स को मिलेगा। इससे 48 लाख कर्मचारियों और 68 लाख पेंशनभोगियों या पूर्व कर्मचारियों को लाभ मिलेगा।

CHANGE OF NAME

I HAVE CHANGED MY NAME OLD NAME MOHMMADUMAIR ANIS KHAN **TO NEW NAME MOHMMAD UMAIR ANEES**
ADD :- NO.3/47,KUTTAR FALIA,KHARAWAD,NANI DAMAN 396210

CHANGE OF NAME

OLD NAME : SINGH SANTOSHKUMAR GAJANAND
NEW NAME : SANTOSH SINGH
S/O : GAJANAND SINGH
ADDRESS : FLAT NO : 404 A WING SUNCITY AMLI NEAR PRABHAT SCHOOL SILVASSA DADRA & NAGAR HAVELI DAMAN & DIU - 396230

गिरफ्तार 3 आतंकियों को उम्रकैद

राजकोट(ईएमएस)। गुजरात के राजकोट की सेशन कोर्ट ने बुधवार को तीन आर्तकियों को उम्रकैद की सजा सुनाई। ये तीनों आतंकी राजकोट शहर के सोनी बाजार से 26 जुलाई, 2023 को गिरफ्तार किए गए थे। जांच में पता चला कि तीनों आतंकी संगठन अल-कायदा से जुड़े हुए थे। गुजरात एटीएस को जानकारी मिली थी कि राजकोट से अमन, अब्दुल शुकूर और सैफ नवाज नाम के तीन आतंकी अल कायदा के लिए स्लीपर सेल तैयार कर रहे थे। तीनों के फोन की जांच पर भी इसका खुलासा हुआ था कि ये संगठन में युवाओं की भर्ती और फंडिंग का काम कर रहे थे। एक आरोपी के पास से एक पिस्टल और तीन कारतूस भी बरामद किए गए थे।

बिजली गिरने से 4 की मौत

रायपुर(ईएमएस)। छत्तीसगढ़ में बिजली गिरने से 4 लोगों की मौत हो गई है। गरियाबंद जिले में 2 महिलाओं और रायगढ़ जिले में 2 युवकों ने दम तोड़ दिया। गरियाबंद जिले के देवभोग थाना क्षेत्र के डोहल गांव में हादसा हुआ। डीलेश्वरी दुर्गा (43) और सूरजो बाई (60) की मौके पर मौत हो गई। दोपहर लगभग ढाई बजे अचानक मौसम बदला और बादल गरजने लगा। बारिश से बचने तीन महिलाएं बरगद पेड़ के नीचे आ गईं। इस दौरान एक के सीने में तो दूसरे के सिर पर बिजली गिरी। वहीं गर्भवती महिला के पांव में करंट का आभास हुआ। गर्भवती महिला का इलाज जारी है।

DECLARATION

MY OLD NAME WAS PATEL KASHYAP DINESHCHANDRA AND MY NEW NAME IS PATEL KASHYAP DINESHBHAI AS PER DOCUMENT.
ADDRESS :- A/401 SHRI RAM BUILDING, MANORATH RESIDENCY, SAYLI ROAD OPP LIONSSCHOOL, SILVASA, DADRA & NAGAR HAVELI, 396230.

राष्ट्र साधना के 100 वर्ष

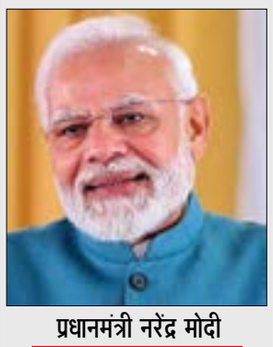

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

जिस तरह विशाल नदियों के किनारे मानव सभ्यताएं पनपती हैं, उसी तरह संघ के किनारे भी सैकड़ों जीवन पुष्पित-पल्लवित हुए हैं। जैसे एक नदी जिन रास्तों से बहती हैं, उन क्षेत्रों को अपने जल से समृद्ध करती हैं, वैसे ही संघ ने इस देश के हर क्षेत्र, समाज के हर आयाम को स्पर्श किया है। जिस तरह एक नदी कई धाराओं में खुद को प्रकट करती है, संघ की यात्रा भी ऐसी ही है। संघ के अलग-अलग संगठन भी जीवन के हर पक्ष से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करते हैं।

100 वर्ष पूर्व विजयदशमी के महापर्व पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना हुई थी। ये हजारों वर्षों से चली आ रही उस परंपरा का पुनर्स्थापन था,जिसमें राष्ट्र चेतना समय-समय पर उस युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए,नए-नए अवतारों में प्रकट होती है। इस युग में संघ उसी अनादि राष्ट्र चेतना का पुण्य अवतार है। ये हमारी पीढ़ी के स्वयंसेवकों का सौभाग्य है कि हमें संघ के शताब्दी वर्ष जैसा महान अवसर देखने मिल रहा है। मैं इस अवसर पर राष्ट्रसेवा के संकल्प को समर्पित कोटि-कोटि स्वयंसेवकों को शुभकामनाएं देता हूं। मैं संघ के संस्थापक, हम सभी के आदर्श...परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। संघ की 100 वर्षों की इस गौरवमयी यात्रा की स्मृति में भारत सरकार ने विशेष डाक टिकट और स्मृति सिक्के भी जारी किए हैं।

जिस तरह विशाल नदियों के किनारे मानव सभ्यताएं पनपती हैं, उसी तरह संघ के किनारे भी सैकड़ों जीवन पुष्पित-पल्लवित हुए हैं। जैसे एक नदी जिन रास्तों से बहती हैं, उन क्षेत्रों को अपने जल से समृद्ध करती हैं, वैसे ही संघ ने इस देश के हर क्षेत्र, समाज के हर आयाम को स्पर्श किया है। जिस तरह एक नदी कई धाराओं में खुद को प्रकट करती है, संघ की यात्रा भी ऐसी ही है। संघ के अलग-अलग संगठन भी जीवन के हर पक्ष से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करते हैं। शिक्षा, कृषि, समाज कल्याण, आदिवासी कल्याण,महिला सशक्तिकरण, समाज जीवन के ऐसे कई क्षेत्रों में संघ निरंतर कार्य करता रहा है। विविध क्षेत्र में काम करने वाले हर संगठन का उद्देश्य एक ही है, भाव एक ही है....राष्ट्र प्रथम

अपने गठन के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र निर्माण का विराट उद्देश्य लेकर चला। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ ने व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण रास्ता चुना और इस चलने के लिए जो कार्यपद्धति चुनी वो थी नित्य-नियमित चलने वाली शाखाएं। संघ शाखा का मैदान, एक ऐसी प्रेरणा भूमि है, जहां से स्वयंसेवक की अहम् से वयं की यात्रा शुरू होती है। संघ की शाखाएंङ्घव्यक्ति निर्माण की यज्ञवेदी हैं।

राष्ट्र निर्माण का महान उद्देश्य, व्यक्ति निर्माण का स्पष्ट पथ और शाखा जैसी सरल, जीवंत कार्यपद्धति यही संघ की सौ वर्षों की यात्रा का आधार बने। इन्हीं स्तंभों पर खड़े होकर संघ ने लाखों स्वयंसेवकों को गढ़ा, जो विभिन्न क्षेत्रों में देश को आगे बढ़ा रहे हैं।

संघ जब से अस्तित्व में आयाङ्घसंघ के लिए देश की प्राथमिकता ही उसकी अपनी प्राथमिकता रही। आजादी की

लड़ाई के समय परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी समेत अनेक कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया, डॉक्टर साहब कई बार जेल तक गए। आजादी की लड़ाई में कितने ही स्वतन्त्रता सेनानियों को संघ संरक्षण देता रहाङ्घउनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करता रहा। आजादी के बाद भी संघ निरंतर राष्ट्र साधना में लगा रहा। इस यात्रा में संघ के खिलाफ साजिशें भी हुईं, संघ को कुचलने का प्रयास भी हुआ। ऋषितुल्य परम पूज्य गुरु जी को झूठे केस में फंसाया गया। लेकिन संघ के स्वयंसेवकों ने कभी कटुता को स्थान नहीं दिया। क्योंकि वो जानते है, हम समाज से अलग नहीं हैं, समाज हमसे ही तो बना है। समाज के साथ एकात्मता और संवैधानिक संस्थाओं के प्रति आस्था ने संघ के स्वयंसेवकों को हर संकट में स्थित प्रज्ञ रखा हैङ्घसमाज के प्रति संवेदनशील बनाए रखा है।

प्रारंभ से संघङ्घ राष्ट्रभक्ति और सेवा का पर्याय रहा है। जब विभाजन की पीड़ा ने लाखों परिवारों को बेघर कर दिया, तब स्वयंसेवकों ने शरणार्थियों की सेवा की। हर आपदा में संघ के स्वयंसेवक अपने सीमित संसाधनों के साथ सबसे आगे खड़े रहते रहे। यह केवल राहत नहीं थी, यह राष्ट्र की आत्मा को संबल देने का कार्य था। खुद कष्ट उठाकर दूसरों के दुख हरना...ये हर स्वयंसेवक की पहचान है। आज भी प्राकृतिक आपदा में हर जगह स्वयंसेवक सबसे पहले पहुंचने वालों में से एक रहते हैं।

अपनी 100 वर्षों की इस यात्रा में, संघ ने समाज के अलग-अलग वर्गों में आत्मबोध जगायाङ्घस्वाभिमान जगाया। संघ देश के उन क्षेत्रों में भी कार्य करता रहा है..जो दुर्गम हैंङ्घजहाँ पहुँचना सबसे कठिन है। संघ...दशकों से आदिवासी परंपराओं, आदिवासी रीति-रिवाज, आदिवासी मूल्यों को सहेजने-संवारने में अपना सहयोग देता रहा है...अपना कर्तव्य निभा रहा है। आज सेवा भारती...विद्या भारती, एकल विद्यालय...वनवासी कल्याण आश्रम...आदिवासी समाज के सशक्तिकरण का स्तंभ बनकर उभरे हैं।

समाज में सदियों से घर कर चुकी जो बीमारियाँ हैं, जो ऊंच-नीच की भावना है, जो कुप्रथाएं हैं, ये हिन्दू समाज की बहुत बड़ी चुनौती रही हैं। ये एक ऐसी गंभीर चिंता है, जिस पर संघ लगातार काम करता रहा है। डॉक्टर साहब से लेकर आज तक, संघ की हर महान विभूति ने, हर सर-संघचालक ने भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। परम पूज्य गुरु जी ने निरंतर ह्न हिन्दू पतितो भवेत्ह्न की भावना को आगे बढ़ाया। पूज्य बाला साहब देवरस जी कहते थे- छुआछूत अगर पाप नहीं, तो दुनिया में कोई पाप नहीं! सरसंघचालक रहते हुए पूज्य रज्जू भैया जी और पूज्य सुदर्शन जी ने भी इसी भावना को आगे बढ़ाया। वर्तमान सरसंघचालक आदरणीय मोहन भागवत जी ने भी समरसता के लिए समाज के सामने एक कुआं, एक मंदिर और एक श्मशान का स्पष्ट लक्ष्य रखा है।

जब 100 साल पहले संघ अस्तित्व में आया था तो उस समय की आवश्यकताएं, उस समय के संघर्ष कुछ और थे। लेकिन आज 100 वर्षों बाद जब भारत विकसित होने की तरफ बढ़ रहा है तब आज के समय की चुनौतियां अलग हैं, संघर्ष अलग हैं। दूसरे देशों पर आर्थिक निर्भरता, हमारी एकता को तोड़ने की साजिशें, डेमोग्राफी में बदलाव के षड़यंत्र, हमारी सरकार इन चुनौतियों से तेजी से निपट रही है। मुझे ये खुशी है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी इन चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस रोडमैप भी बनाया है।

संघ के पंच परिवर्तन, स्व बोध, सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, नागरिक शिष्टाचार और पर्यावरण ये संकल्प हर स्वयंसेवक के लिए देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों को परास्त करने की बहुत बड़ी प्रेरणा हैं।

स्व बोध की भावना का उद्देश्य गुलामी की मानसिकता से मुक्त होकर अपनी विरासत पर गर्व और स्वदेशी के मूल संकल्प को आगे बढ़ाना है। सामाजिक समरसता के जरिए वंचित को वरीयता देकर सामाजिक न्याय की स्थापना का प्रण है। आज हमारी सामाजिक समरसता को घुसपैठियों के कारण डेमोग्राफी में आ रहे बदलाव से भी बड़ी चुनौती मिल रही है। देश ने भी इससे निपटने के लिए डेमोग्राफी मिशन की घोषणा की है। हमें कुटुम्ब प्रबोधन यानी परिवार संस्कृति और मूल्यों को भी मजबूत बनाना है। नागरिक शिष्टाचार के जरिए नागरिक कर्तव्य का बोध हर देशवासी में भरना है। इन सबके साथ अपने पर्यावरण की रक्षा करते हुये आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करना है।

अपने इन संकल्पों को लेकर संघ अब अगली शताब्दी की यात्रा शुरू कर रहा है। 2047 के विकसित भारत में संघ का हर योगदान, देश की ऊर्जा बढ़ाएगा, देश को प्रेरित करेगा। पुनः प्रत्येक स्वयंसेवक को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। *(आरएसएस के 100 वर्ष पूरे होने पर राष्ट्र साधना के 100 वर्ष शीर्षक से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा लिखित आलेख)*

संपादकीय

मौत या हत्या

तमिलनाडु.के करूर जिले में एक रैली में भगदड़.मचने से 40 लोगों की मौत हो गई और अनेक घायल हो गए। घायलों में कुछ की हालत गंभीर बताई गई है। मरने वालों में 10 बच्चे और 16 महिलाएं शामिल हैं। टीवीके के नेता और अभिनेता विजय ने शनिवार को तमिलनाडु के करूर जिले में रैली की थी। विजय ने भगदड़.में मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर घोषणा की कि हादसे में मारे गए लोगों के परिजनों को 20-20 लाख रुपये का मुआवजा देंगे। घायलों को भी 2 लाख देने का ऐलान किया। हादसा उस समय हुआ जब हजारों समर्थक विजय के संबोधन को सुनने के लिए इकट्ठा थे। कार्यक्रम स्थल पर भीड़.बढ़ती चली गई। इसी पुलिस ने एकाएक लाठीचार्ज कर दिया जिससे भगदड़.मच गई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने घटना को 'गंभीर और चिंताजनक' बताया। करूर नगर पुलिस ने टीवीके के नेताओं के समेत कई लोगों के खिलाफ बीएनएस की सुसंगत धाराओं में मामला दर्ज किया है। भगदड़.के कारणों को लेकर लोगों के अपने-अपने दावे हैं, और स्पष्ट नहीं है कि क्या गड़ब़ड़.हुई; क्या आयोजन स्थल का चयन गलत होने से यह सब हुआ या फिर भीड़.के बेकाबू हो जाने से। कुछ लोगों का दावा है कि सभा स्थल पर भीड़.ने अवरोधक के लिए लगाए गए टिन शेड़ को गिरा दिया और कई लोग पास की फूस की छतों पर चढ.गए जो उनका भार सहन नहीं कर सकीं और गिर गइ। इस बीच स्थिति को काबू में लाने के लिए पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया जिससे भीड़.में फंसे बच्चों समेत अन्य लोग समझ नहीं पाए कि हो क्या रहा है। बेशक, यह घटना राजनीतिक आयोजनों में सुरक्षा में चूक की कमी को उजागर करती है। ऐसी घटनाओं को रोकने के लिएएसओपी बनाई जानी चाहिए ताकि रैलियों में किसी तरह की भगदड़.न होने पाए। लेकिन सबसे बड़ा सवाल है कि देश में पिछले कुछ समय में हुई ऐसी भगदड़ों के बाद भी सबक क्यों नहीं लिया गया? राजनीतिक आयोजनों ही नहीं, बल्कि धार्मिक स्थलों और खेल के मैदानों में भी दर्शकों की भीड़.बेतहाशा बढ़ने पर इस प्रकार के हादसे की आशंका बराबर बनी रहती है। जरूरी है कि भीड़.के कारगर प्रबंधन के लिहाज से भी बंदोबस्ती में ध्यान रखा जाए। एसओपी तैयार किया जाना तो बेहद जरूरी है।

चिंतन-मनन

उत्सव है बुद्धत्व

बुद्धत्व मौलिक रूप से प्राप्ति है, विद्रोह है, बगावत है। काशी के पंडितों की सभा प्रमाणपत्र थोड़े ही देगी बुद्ध को! बुद्धपुरुष तुम्हें पोप की पदवियों पर नहीं मिलेंगे और न शंकराचार्यों की पदवियों पर मिलेंगे। क्योंकि ये तो परंपराएं हैं। और परंपरा में जो आदमी सफल होता है, वह मुर्दा हो तो ही सफल हो पाता है। परंपरा के द्वारा पद पाना सिर्फ मुर्दों के भाग्य में हैं, जीवंत लोगों के नहीं। यह सौभाग्य है जीवितों का और मुर्दों का दुर्भाग्य! इसलिए तुम कैसे पहचानोगे? और पूरी पहचान का तुम विचार ही मत करना। क्योंकि तुम पूरा पहचानोगे तो तुम बुद्ध हो जाओगे और तुम बुद्ध होते तो पहचानने की जरूरत न थी। तुम नहीं हो, इसीलिए तो पहचानने चले हो। इसलिए पूरे-पूरे का खयाल मत करना। छोटा सा टुकड़ा चांदनी का तैर आए तुम्हारे पास, तो बहुत धन्यभाग! अहोभाग! तुम उतने ही पर भरोसा करना। उस चांदनी के टुकड़े को पकड़ कर अगर बढ़ते रहे, चलते रहे, तो किसी दिन पूरे चांद के भी मालिक हो जाओगे। किसी दिन पूरा आकाश भी तुम्हारा हो जाएगा। तुम्हारा है; लेकिन अभी तुम्हें पहुंचना नहीं आया, चलना नहीं आया। अभी तुम घुटने के बल चलते हुए छोटे बच्चे की भांति हो। अभी तुम्हें चलने का अभ्यास करना है। तो संत उदास नहीं होंगे। बुद्धपुरुष उदास नहीं होंगे। जिनको तुम देखते हो मंदिरों-मस्जिदों में बैठे गुरु-गंभीर लोग, लंबे चेहरों वाले लोग, बुद्धपुरुष वैसे नहीं होंगे। बुद्धपुरुष तो उत्सव है। बुद्धपुरुष तो ऐसा है जिसमें अस्तित्व के कमल खिल गए। बुद्धपुरुष गंभीर नहीं। बुद्धपुरुष के पास तो मृदुहास मिलेगा। हल्की-हल्की हंसी। एक मुस्कुराहट। एक स्मित। एक उत्सव। एक आनंदभाव। तो तुम्हारी आंसुओं से भरी आंखों और कारागृह में दबे चित्त के पास अगर तुम्हें कभी कोई एक स्मित, एक हास, एक उत्सव की झलक भी आ जाए, तो छोड़ा मत उन चरणों को। उन्हीं के सहारे तुम परममुक्ति और स्वातंत्र्य के आकाश तक पहुंच जाओगे। अब तक तो तुम्हारी पहचान पतझड़ से थी। तुम्हारा जीवन राग आंसुओं और रुदन से भरा था। तुमने जीवन का कोई और अहोभाव का क्षण जाना नहीं था। नरक ही नरक जाना था। जिस क्षण किसी व्यक्ति के पास तुम्हें लगे- हवा का झोंका आया- स्वच्छ, ताजा, मलयाचल से चलकर, पहाड़ों से उतर कर तुम्हारी घाटियों में, तुम्हारे अंधेरे में- हवा का ऐसा झोंका जिसके पास अनुभव में हो जाए, समझना बुद्धत्व करीब है। कुछ घटा है।

दशहरा: विविधताओं में एकता का सांस्कृतिक उत्सव

योगेश कुमार गोयल

प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ल दशमी को 'विजयादशमी' पर्व के रूप में मनाया जाता है, जिसे दशहरा भी कहा जाता है। इस वर्ष उदया तिथि के अनुसार दशहरा 2 अक्तूबर को मनाया जा रहा है। समस्त भारत में दशहरा भगवान श्रीराम द्वारा लंकापति रावण के वध के रूप में अर्थात बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में तथा आदि शक्ति दुर्गा द्वारा महाबलशाली राक्षसों महिषासुर व चण्ड-मुण्ड का वध किए जाने के रूप में मनाया जाता है। मान्यता है कि भगवान श्रीराम ने रावण पर विजय पाने के लिए इसी दिन प्रस्थान किया था। इतिहास में कई ऐसे उदाहरण हैं, जिनसे पता चलता है कि हिन्दू राजा अक्सर इसी दिन विजय के लिए प्रस्थान किया करते थे। इसी कारण इस पर्व को विजय के लिए प्रस्थान का दिन भी कहा जाता है और इसे क्षत्रियों का त्यौहार भी माना गया है। इस दिन अपराजिता देवी की पूजा भी होती है। मान्यता है कि सर्वप्रथम श्रीराम ने समुद्र तट पर शारदीय नवरात्रि पूजा का प्रारंभ किया था और तत्पश्चात दसवें दिन लंका विजय के लिए प्रस्थान करते हुए विजय प्राप्त की थी। तभी से दशहरे को असत्य पर सत्य तथा अधर्म पर धर्म की जीत के पर्व के रूप में मनाया जा रहा है।

दो शब्दों दश तथा हरा से मिलकर बना है दशहरा। दश का अर्थ है दस तथा हरा का अर्थ है ले जाना। इस प्रकार दशहरे का मूल अर्थ है दस अवगुणों या बुराईयों को ले जाना यानी इस अवसर पर अपने भीतर के दस अवगुणों को खत्म करने का संकल्प लेना। दरअसल हर इंसान के भीतर रावण रूपी अनेक बुराईयां मौजूद होती हैं और सभी पर एक बार में विजय पाना संभव भी नहीं है, इसलिए दशहरे पर ऐसी ही कुछ बुराईयों का नाश करने का संकल्प लेकर इस पर्व की सार्थकता सुनिश्चित की जा सकती है। दशहरे को रावण पर राम की विजय अर्थात आसुरी शक्तियों पर सात्विक शक्तियों की विजय तथा अन्याय पर न्याय की, बुराई पर अच्छाई की, असत्य पर सत्य की, दानवता पर मानवता की, अधर्म पर धर्म की, पाप पर पुण्य की और घृणा पर प्रेम की जीत के रूप में मनाया जाता है। दशहरे का धार्मिक के साथ सांस्कृतिक महत्व भी कम नहीं है। यह पर्व देश की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय एकता का पर्व है। सही अर्थों में यह पर्व अपने भीतर छिपे दुगुर्णों रूपी रावण को मारकर तमाम अवगुणों पर विजय प्राप्त करने का शुभकाल है।

दशहरे के उत्सव का संबंध नवरात्रों से जोड़कर देखा जाता रहा है। शक्ति की उपायना का यह पर्व सनातन काल से ही शारदीय नवरात्र प्रतिपदा से शुरू होकर नवमी तक नौ तिथि, नौ नक्षत्र और नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ मनाया जाता है। माना जाता है कि नवरात्रों में देवी की शक्ति से दसों दिशाएं प्रभावित होती हैं और देवी दुर्गा की कृपा से ही दसों दिशाओं पर विजय प्राप्त होती है, इसलिए भी नवरात्रों के बाद आने वाली दशमी को ह्यविजयादशमीह्न कहा जाता है। नवरात्रों के नौ दिनों में हम देवी के नौ रूपों की पूजा करते हैं लेकिन ऐसा करते हुए हमें यह भी समझना चाहिए कि हमारे समाज में सभी नारियां दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती या काली का ही रूप हैं, इसलिए इन पर्वों की सार्थकता सही मायनों में तभी सिद्ध हो सकती है, जब हम अपने समाज में देवी स्वरूपा नारी को उचित मान-सम्मान दें, उसे गर्भ में ही मौत की नींद सुलाने से बचाएं, शिक्षित करके उन्हें उनका हक दिलाएं, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाएं और सम्मानित जीवन जीने का अधिकार प्रदान करें। शारदीय नवरात्रों का अहम अंग बनकर प्रतिवर्ष दुर्गोत्सव को पूर्णता प्रदान करता बुराई पर अच्छाई तथा असत्य पर सत्य की जीत को परिभाषित करता यह पावन पर्व हमें मानवीय मूल्यों के संरक्षण में सर्वत्र विजयी होने का संदेश देता है। मान्यता है कि आदि शक्ति दुर्गा ने दशहरे के ही दिन महाबलशाली असुर सम्राट महिषासुर का वध किया था। जब महिषासुर के अत्याचारों से भूलोक और देवलोक त्राहि-त्राहि कर उठे थे, तब आदि शक्ति मां दुर्गा ने 9 दिनों तक महिषासुर के साथ बहुत भयंकर युद्ध किया था और दसवें दिन उसका वध करते हुए उस पर विजय हासिल की थी। इन्हीं 9 दिनों को दुर्गा पूजा (नवरात्र) के रूप में एवं शक्ति संचय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है और महिषासुर पर आदि शक्ति मां दुर्गा की विजय वाले दसवें दिन को विजयादशमी के रूप में मनाया जाता है। श्राद्धों के समाप्ति वाले दिन मिट्टी के किसी बर्तन में मिट्टी में जौ बोए जाने की परम्परा बहुत से क्षेत्रों में देखने को मिलती है। दशहरे के दिन तक जौ उगकर काफी बड़े हो जाते हैं, जिन्हें ह्यज्वारेह्न कहा जाता है। मिट्टी के जिस बर्तन में जौ बोए जाते हैं, उसे स्त्री के गर्भ का प्रतीक माना गया है और ज्वारों को उसकी संतान। दशहरे के दिन लड़कियां अपने भाईयों की पगड़ी अथवा सिर पर ज्वारे रखती हैं और भाई उन्हें कोई उपहार देते हैं। सही मायनों में इस पर्व की सार्थकता तभी सुनिश्चित हो सकती है, जब हम इस अवसर पर आत्मचिंतन करते हुए अपने भीतर की बुराईयों रूपी रावण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए उनका विनाश करने का प्रयास करें।

गांधी और गांधी विचार को कुचलने की कुचेष्टाएं कब तक?

ललित गर्ग

लंदन के प्रसिद्ध टैविस्टॉक स्क्वायर में महात्मा गांधी की 57 साल पुरानी कांस्य की प्रतिमा पर हुआ हमला केवल एक मूर्ति को क्षतिग्रस्त करने की घटना भर नहीं है, बल्कि यह गांधी के अस्तित्व, उनके विचार और भारत की आत्मा पर आघात है। गांधी प्रतिमा के साथ छेड़छाड़ करते हुए काले रंग से लिखा है, 'गांधी- मोदी, हिंदुस्तानी टेररिस्ट...।' वहां एक तिरंगे का भी अपमान किया गया है और उसपर भी 'टेररिस्ट' लिखा हुआ है। जिस समय यह हमला हुआ, वह भी बेहद प्रतीकात्मक है, अंतरराष्ट्रीय गांधी जयंती यानी अहिंसा दिवस से महज तीन दिन पहले। यह समय का ऐसा चयन है जो यह दशार्ता है कि अहिंसा के विचार और गांधी के व्यक्तित्व को मिटाने की एक सुनियोजित विकृत मानसिकता एवं साजिश है। गांधी की प्रतिमा महज धातु का ढांचा नहीं, बल्कि उन मूल्यों का जीवंत प्रतीक है जिन्होंने न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया को नई दृष्टि दी, नई दिशा दी एवं शांतिपूर्ण अहिंसक जीवनशैली दी है। इस पर आघात करना इस बात का प्रमाण है कि हिंसा की प्रवृत्तियां, आतंक की मानसिकता एवं नफरत-द्वेष की विध्वंक शक्तियां अब भी गांधी के विचारों से डरती हैं और उसे क्षत-विक्षत एवं ध्वस्त करने के षडयंत्र रचती रहती है, पर महात्मा गांधी भारत के अकेले ऐसे महापुरुष हैं जिन्हें कोई गोली या गाली नहीं मार सकती। गांधी की राजनीति व धर्म का आधार सत्ता नहीं, सेवा था, वसुधैव कुटुम्बकम् था। जनता को भयमुक्त व वास्तविक आजादी दिलाना उनका लक्ष्य था। वे सम्पूर्ण मानवता की अमर धरोहर हैं। उन्होंने दुनिया को अहिंसा का सूत्र देकर शांतिपूर्ण विश्व-संरचना की। दलितों के उद्धार और उनकी प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन लगा दिया था। उनके जीवन की विशेषता कथनी और करनी में अंतर नहीं होना था।

महात्मा गांधी की प्रतिमा पर अज्ञात लोगों ने जो हमला किया और आपत्तिजनक नारे लिखे। भारतीय उच्चायोग ने इसे अहिंसा की विरासत पर हमला बताया। मेट्रोपॉलिटन पुलिस जांच में जुटी है। ब्रिटेन की उच्चायुक्त लिंडी कैमरन ने घटना को दुखद बताते हुए कहा कि गांधी की शिक्षाएं हमें सदा एकजुट करती रहेंगी। गांधी के व्यक्तित्व एवं विचारों को आहत करने की यह घटना केवल ब्रिटेन के अस्तित्व एवं अस्मिता तक सीमित नहीं रहती, बल्कि भारत की गरिमा और उसकी सांस्कृतिक उपस्थिति को भी चुनौती देती है। जब किसी राष्ट्र के सार्वभौमिक प्रतीक पर हमला होता है, तो वह उस राष्ट्र के स्वाभिमान और उसके विचारों पर हमला माना जाता है। गांधी केवल भारत के नायक नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के नैतिक मार्गदर्शक हैं। उनका स्मारक क्षतिग्रस्त करना मानवता की उस चेतना को धूमिल करने का प्रयास है जो संवाद, सहिष्णुता, अहिंसा और शांति पर आधारित है। ऐसे समय में जब दुनिया युद्ध, आतंक और कट्टरता से त्रस्त है, गांधी का विचार और भी प्रासंगिक हो जाता है। ऐसे विचार को कुचलने की चेष्टा न केवल भारत के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर चुनौती है। समीक्षात्मक दृष्टि से देखा जाए तो यह घटना हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि आखिर क्यों अहिंसा जैसे सार्वभौमिक मूल्य आज के दौर में असहनीय प्रतीत होते हैं? क्यों कुछ समूह इतिहास को मिटाने और संवाद की जगह हिंसा को स्थापित करने पर आमादा हैं? यह केवल अतीत की स्मृति पर हमला नहीं है, बल्कि भविष्य की दिशा पर भी सवाल खड़ा करता है। मूर्तियां टूटीं तो उन्हें ठीक किया जा सकता है, लेकिन यदि विचारों को खंडित करने का यह सिलसिला जारी रहा तो यह मानवता की आत्मा के लिए घातक सिद्ध होगा।

समय-समय पर शरारती एवं असामाजिक तत्व देश एवं दुनिया में भारत की महान् विभूतियों- गांधी-मोदी के दर्शन व उनकी कार्य-पद्धतियों पर कीचड़ उछालते रहे हैं और उन्हें गालियां देकर गौरवान्वित होते रहे हैं। ताजा गांधी प्रतिमा को तोड़ने की घटना किसी साधारण शरारत या स्थानीय असंतोष का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उस गहरी हिंसक, आतंकी और विकृत मानसिकता का प्रतीक है, जो दुनिया में अहिंसा की आवाज को दबाना चाहती है। यह घटना केवल एक प्रतिमा को खंडित करने की नहीं, बल्कि महात्मा गांधी के विचारों पर आहत करने की साजिश है। गांधी महज एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक दर्शन हैं। उनके सत्य और अहिंसा के सिद्धांत विश्व राजनीति, समाज और मानवता के लिए अब भी सबसे बड़ी प्रेरणा बने हुए हैं। इसीलिए हिंसक मानसिकताएं बार-बार इन मूल्यों को मूक बनाने या कुचलने का प्रयास करती हैं। गांधी प्रतिमा पर हमला वस्तुतः उसी मानसिकता की पुनरावृत्ति है, जिसने उनकी हत्या की थी। आज यह मानसिकता कभी धार्मिक उग्रवाद, कभी नस्लीय भेदभाव, कभी आतंकवाद और कभी आर्थिक साम्राज्यवाद का रूप धारण करके सामने आती है। यह घटना भारत ही नहीं, पूरी दुनिया के लिए गंभीर चेतावनी है कि यदि अहिंसा और सहअस्तित्व की आवाज को चुप करा दिया गया, तो मानव सभ्यता हिंसा, आतंक और विनाश के अंधकार में जा सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीते वर्षों में जिस तरह शांति, वैश्विक सहयोग और अहिंसक संवाद की परंपरा को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है, वह गांधी दर्शन की ही आधुनिक अभिव्यक्ति है। अंतरराष्ट्रीय संघर्षों, जलवायु संकटों, आतंकवादी क्रूरताओं और युद्ध की विभीषिकाओं से जूझती दुनिया में भारत की यह भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। ऐसे में गांधी प्रतिमा पर हमला, दरअसल इस शांति अभियान को ठेस पहुँचाने का संगठित प्रयास है। यह केवल भारत को नहीं, बल्कि उन सभी देशों और समुदायों को चुनौती है, जो अहिंसा को सभ्यता का मूल मंत्र मानते हैं। आज यह जरूरी है कि हम इस हिंसक और आतंकवादी मानसिकता को करारा जवाब दें। यह जवाब केवल प्रतिवाद या आक्रोश से नहीं, बल्कि गांधी के विचारों को और अधिक दृढ़ता से जीकर और फैलाकर देना होगा। जब-जब गांधी प्रतिमा पर चोट की गई है, तब-तब गांधी और बड़े होकर खड़े हुए हैं। कभी-कभी प्रशंसा नहीं ऐसी गालियां गांधी को ज्यादा पूजनीय बनाती रही हैं। जिस प्रकार गांधी ने कहा था-'आप मुझे मार सकते हैं, मेरे शरीर को नष्ट कर सकते हैं, पर मेरे विचारों को समाप्त नहीं कर सकते'-यह सत्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है। दरअसल, अहिंसा को कुचलने की हर कोशिश अहिंसा को और अधिक शक्तिशाली बना देती है। यह हमला गांधी की अमरता का प्रमाण है। हमें इस अवसर को केवल निंदा तक सीमित न रखकर, गांधी के सत्य, प्रेम और सहिष्णुता के संदेश को और व्यापक स्तर पर प्रसारित करना चाहिए। तभी आतंकवादी मानसिकता को वास्तविक और स्थायी जवाब मिलेगा।

गांधी को कितने सालों से कटघरे में खड़ा किया जाता रहा है। जीते जी और मरने के बाद गांधी ने कम गालियां नहीं खाईं। गोडसे ने गोली से उनके शरीर को मारा पर आज तो उनके विचारों को बार-बार मारा जा रहा है। महात्मा के शिष्यों ने, बापू के बेटों ने, संत के अनुयायियों ने और गांधी की पार्टी वालों ने उनको बार-बार बेचा है, उनसे कमाया है, उनके नाम से वोट मांगे हैं, सत्ता प्राप्त की है, सुबह-शाम धोखा दिया है और उनकी चादर से अपने दाग छिपाये हैं। लेकिन बहुत हो गया, अब यह आवश्यक है कि इस घटना का विरोध केवल भावनात्मक या औपचारिक स्तर पर न होकर ठोस, नैतिक और प्रभावी स्वरूप में हो। आज गांधी को खोजने की जरूरत मूर्तियों में नहीं, बल्कि अपने जीवन और आचरण में है। यही इस घटना से निकला सबसे बड़ा संदेश है कि अहिंसा की रक्षा केवल स्मारकों से नहीं बल्कि व्यवहार से होगी। गांधी की प्रतिमा का क्षरण क्षणिक है, किंतु उनके विचारों की हत्या यदि हम होने देंगे तो यह सम्पूर्ण मानवता की हार होगी।

संक्षिप्त समाचार

अफगानिस्तान में तालिबान की सख्ती, इंटरनेट सेवाएं ठप

काबुल, एजेंसी। सोमवार को अफगानिस्तान में अचानक इंटरनेट ब्लैकआउट की स्थिति पैदा हो गई, जिससे देशभर में फाइबर-ऑप्टिक इंटरनेट सेवाएं ठप हो गई। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह कदम तालिबान सरकार द्वारा अनैतिकता रोकने के प्रयास के तहत उठाया गया है। मामले में नेटब्लॉक्स नामक इंटरनेट निगरानी संस्था ने बताया कि सोमवार को अफगानिस्तान में इंटरनेट कनेक्टिविटी सिर्फ 14% रह गई, जो लगभग पूरे देश में टेलिकॉम सेवाओं के ठप होने का संकेत है। संस्था ने कहा कि इससे लोगों का बाहरी दुनिया से संपर्क लगभग कट गया है। यह पहला मौका है जब अगस्त 2021 में सत्ता में आने के बाद तालिबान सरकार ने इतनी बड़ी इंटरनेट बंदी की है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, कुछ हफ्ते पहले तालिबान के सर्वोच्च नेता हिबतुल्ला अखुंदजादा ने फाइबर-ऑप्टिक इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया था, ताकि समाज में बढ़ती卐अनैतिकता卐 को रोका जा सके। तब से कई प्रांतों में इंटरनेट सेवाएं बाधित हो चुकी थीं।

कोयला उद्योग को फिर से खड़ा करने में जुटे ट्रंप

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने देश में कोयला उद्योग को दोबारा ज़िंदा करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। ट्रंप प्रशासन ने सोमवार को घोषणा की कि 13 मिलियन (1.3 करोड़) एकड़ संघीय जमीन को कोयला खनन के लिए खोला जाएगा और 625 मिलियन डॉलर की मदद से देश के पुराने कोयला आधारित बिजली संयंत्रों को फिर से चालू या आधुनिक बनाया जाएगा। यह फैसला ऊर्जा विभाग, आंतरिक मंत्रालय और पर्यावरण संरक्षण एजेंसी द्वारा लिया गया है। यह कदम ट्रंप द्वारा अप्रैल में जारी कार्यकारी आदेशों का हिस्सा है, जिसमें उन्होंने कोयला उद्योग को फिर से मजबूत बनाने की बात कही थी। अमेरिका में कोयला, एक भरोसेमंद लेकिन प्रदूषणकारी ऊर्जा स्रोत रहा है, जो पिछले कुछ वर्षों में सख्त पर्यावरण नियमों और सस्ती प्राकृतिक गैस के कारण घटता जा रहा था।

टेक्सास में कसीनो पार्किंग में शख्स ने की गोलीबारी, दो लोगों की मौत-कई घायल; जांच में जुटे अधिकारी

टेक्सास , एजेंसी। अमेरिका के टेक्सास के एक सीमा शहर में साप्ताहांत के दौरान एक शख्स ने कसीनो की पार्किंग में गोलीबारी की। इसमें दो लोगों की मौत हो गई और पांच अन्य घायल हो गए। अधिकारी इस बात की जांच कर रहे हैं कि आखिर उस व्यक्ति ने गोलीबारी क्यों की। आरोपी केरयान रशान जोन्स (34 वर्षीय) को शनिवार रात गोलीबारी के कुछ घंटों बाद एक ट्रैफिक स्टॉप पर गिरफ्तार किया गया। घटना किकाफू लकी ईगल कसीनों की पार्किंग में हुई थी, जो ईगल पास के नजदीक है। पीछा करने के बाद पुलिस ने जोन्स को रविवार को सुबह स्कॉटडेल के पास पकड़ा गया। स्कॉटडेल, ईगल पास से करीब 290 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। विल्सन काउंटी शेरिफ कार्यालय ने यह जानकारी दी। मैवरिक काउंटी के शेरिफ टॉम श्मरबेर के मुताबिक, दो लोगों की हत्या करने और पांच लोगों को घातक हथियार से नुकसान पहुंचाने के आरोप में जोन्स के खिलाफ गंभीर धाराओं में मामले दर्ज किए गए हैं। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि जोन्स को कहां रखा गया है और क्या उसकी ओर से कोई वकील पैरवी कर रहा है या नहीं। टेक्सास के सार्वजनिक सुरक्षा विभाग के लेफ्टिनेंट क्रिस्टोफर ओलिवारेज ने कहा कि गोलीबारी किस वजह से हुई, इसकी अभी जांच चल रही है। टेक्सास पुलिस डिपार्टमेंट इस पूरे मामले की जांच कर रही है और उसने बताया कि जांच पूरी होने तक कसीनो बंद रहेगा।

गाजा युद्ध पर विरोध जताना पड़ा भारी, अमेरिका ने कोलंबिया के राष्ट्रपति का वीजा रद्द किया

वाशिंगटन, एजेंसी। कोलंबिया और अमेरिका के बीच रिश्तों में नया तनाव देखने को मिला है। सोमवार को कोलंबिया सरकार ने बताया कि देश की विदेश मंत्री रोसा विलाविसेंसियो ने अपने अमेरिकी वीज़ा को त्याग दिया है, यह कदम उन्होंने राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो का वीज़ा रद्द किए जाने के विरोध में उठाया। राष्ट्रपति पेट्रो ने हाल ही में न्यूयॉर्क में गाजा युद्ध के खिलाफ एक प्रदर्शन में हिस्सा लिया था। इस दौरान उन्होंने फिलिस्तीन को आज़ाद कराने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय सेना बनाने की मांग की थी और अमेरिकी सैनिकों से ट्रंप के आदेश न मानने की अपील भी की थी। वह फिलिस्तीनी पारंपरिक स्कार्फ कुफिया पहनकर प्रदर्शन में शामिल हुए थे। इसके कुछ ही घंटों बाद अमेरिकी विदेश विभाग ने घोषणा की कि पेट्रो के भड़काऊ और गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार के चलते उनका वीज़ा रद्द किया जा रहा है। उस वक्त राष्ट्रपति पेट्रो यूएन महासभा में शामिल होने के बाद कोलंबिया लौट चुके थे।

इंडोनेशिया में इस्लामिक स्कूल की इमारत ढही, एक छात्र की मौत और 65 मलबे के नीचे दबे

जकार्ता, एजेंसी। इंडोनेशिया में इस्लामिक स्कूल की इमारत मंगलवार को अचानक ढह गई। इसकी चपेट में आने से एक छात्र की मौत हो गई। मलबे के नीचे अभी 65 छात्रों के दबे होने की आशंका है। राहत और बचाव कार्य शुरू कर दिया गया है। अधिकारियों ने बताया कि सिदोअर्जो के ईस्ट जावा कस्बे में अल खोजिनी इस्लामिक बोर्डिंग स्कूल स्थित है। इसकी इमारत ढहने की सूचना मिलने के बाद बचावकर्मी, पुलिस और सैन्यकर्मी पूरी रात राहत व बचावकार्य में जुटे रहे। रिपोर्ट के मुताबिक, स्कूल की इमारत जर्जर हालत में थी। घटना के 12 घंटे से भी अधिक समय बाद मंगलवार सुबह छात्रों को बाहर निकालने के प्रयास जारी रहे। उन्होंने बताया कि घटना में एक छात्र की मौत हो गई। कई अन्य घायल हो गए। कम से कम 65 छात्रों के मलबे में दबे होने की आशंका है। इन छात्रों की उम्र 12 से 17 वर्ष के बीच है।

इमारत का किया जा रहा था विस्तार : घटना के 8 घंटे से अधिक समय बाद पुलिस, सैन्यकर्मी और बचावकर्मी आठ घायलों को बाहर निकालने में सफल रहे। बचावकर्मियों को इस दौरान और शव भी दिखे, जिससे मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका है। प्रांतीय पुलिस के प्रवक्ता जूल्स अब्राहम अबास्ट ने बताया कि छात्र उस इमारत में दोपहर की नमाज अदा कर रहे थे। इमारत का अनधिकृत विस्तार किया जा रहा था, तभी अचानक

वह गिर गई। इस निर्माण कार्य को लेकर जांच की जाएगी और उसके आधार पर आगे की कार्रवाई होगी।

मलबे में कई शव देखे गए : घटना इंडोनेशिया के पूर्वी जावा के सिदोअर्जो शहर के अल खोजिनी इस्लामिक बोर्डिंग स्कूल में हुई। कई घंटों के बचाव कार्य के बाद मलबे से आठ छात्रों को निकाला गया और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। बचावकर्मियों ने मलबे में कई शव देखने का दावा किया है, जिससे आशंका है कि मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। फिलहाल बचावकर्मी जीवित लोगों को जल्द से जल्द मलबे से निकालने की कोशिश कर रहे हैं। छात्रों के परिजन मौके पर मौजूद हैं और अपने बच्चों की खबर का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। कई परिजन रोते-बिलखते देखे गए। लापता 65 छात्रों में से अधिकतर सातवीं से 11वीं कक्षा के छात्र हैं, जिनकी उम्र 12 साल से लेकर 17 साल के बीच है। खोज और बचाव अभियान का नेतृत्व कर रहे एक अधिकारी ने बताया कि कंक्रीट के भारी स्लैब और अन्य मलबे के चलते बचाव कार्य बाधित हो रहा है। उन्होंने बताया कि बचाव कार्य के लिए भारी उपकरणों का इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है क्योंकि भारी उपकरणों से ढहा हुआ मलबा और ढह सकता है। यही वजह है कि बचाव कार्य में देरी हो रही है।

पुलिस ने बताया- इमारत के अवैध विस्तार से हुआ हादसा : प्रांतीय पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि छात्र एक इमारत में दोपहर की प्रार्थना कर रहे थे, उसी दौरान इमारत गिर गई। उन्होंने बताया कि स्कूल इमारत का अनधिकृत विस्तार किया जा रहा था। अधिकारियों ने बताया कि हादसे में एक 13 वर्षीय छात्र की मौत हो गई और 99 अन्य छात्र घायल हो गए, जिन्हें अस्पताल ले जाया गया, जिनमें से कुछ की हालत गंभीर है। अधिकारी इमारत के ढहने के कारणों की जांच कर रहे हैं। पुलिस ने बताया कि पुराना प्रार्थना कक्ष दो मंजिला था, लेकिन बिना अनुमति के दो और मंजिलें बनाई जा रही थीं। पुरानी इमारत की नींव कंक्रीट की दो मंजिलों का वजन नहीं संभाल पाई और ढह गई।

अदन की खाड़ी में कार्गो शिप पर हमला, जहाज छोड़कर भागा चालक दल; हूती विद्रोहियों पर लगा आरोप

वॉशिंगटन, एजेंसी। हॉलैंड का झंडा लगे एक कार्गो जहाज पर सोमवार को अदन की खाड़ी में मिसाइल हमला हुआ। इस हमले में जहाज बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुआ है और चालक दल के दो सदस्य गंभीर रूप से घायल हुए हैं। हमले के बाद चालक दल के सदस्य जहाज को छोड़कर भाग गया। अदन की खाड़ी में किसी जहाज पर हुआ यह हाल के समय में सबसे गंभीर हमला है। जिस जगह हमला हुआ, वह लाल सागर से कुछ दूरी पर है। हमले का आरोप ईरान समर्थित यमन के हूती विद्रोहियों पर लगा है। हालांकि अभी तक हूती विद्रोहियों ने आधिकारिक तौर पर हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। फ्रांसीसी सेना के मेरीटाइम सेंटर ने दावा किया है कि कार्गो शिप पर हमला हूती विद्रोहियों द्वारा ही किया गया है। जिस कार्गो शिप पर हमला हुआ, उस पर बीती 23 सितंबर को भी हमले की असफल कोशिश हुई थी। वह हमला भी अदन की खाड़ी में किया गया था। अदन की खाड़ी, बाब अल मंदेब जलडमरूमध्य को लाल सागर से जोड़ती है। बाब अल मंदेब जलडमरूमध्य पूर्वी अफ्रीका को अरब प्रायद्वीप से अलग करता है। जिस जगह जहाज पर हमला हुआ, वह दुनिया के सबसे खास समुद्री रास्तों में से एक है। खासकर कच्चे तेल के व्यापार के लिए यह रूट बेहद अहम है।

शहबाज शरीफ और असीम मुनीर हमेशा हमारे साथ रहे, गाजा प्लान पर पाकिस्तान का समर्थन मिलने पर बोले ट्रंप

वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की गाजा युद्ध खत्म करने की शांति योजना का पाकिस्तान ने समर्थन किया है। ट्रंप ने इसको लेकर पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर की तारीफ की। व्हाइट हाउस की ओर से से 20 बिंदुओं की शांति योजना की घोषणा की गई, जिसके बाद ट्रंप ने प्रेस वार्ता की। उन्होंने बताया कि यह योजना इस्राइल और हमास के बीच जारी संघर्ष को खत्म करने के मकसद से तैयार की गई है। इस प्रेस वार्ता में ट्रंप ने सऊदी अरब, कतर और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) जैसे कई अरब और इस्लामी देशों के नेताओं का आभार जताया, जिन्होंने इस योजना के लिए सुझाव दिए हैं। उन्होंने इस योजना को नए गाजा के पुनर्निर्माण के लिए एक साझा प्रयास बताया। ट्रंप ने पाकिस्तानी नेतृत्व की चर्चा करते हुए कहा, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री और फील्ड मार्शल (जनरल असीम मुनीर) शुरुआत से ही हमारे साथ थे। उन्होंने अभी एक बयान जारी किया है कि वे इस प्रस्ताव पर पूरी तरह विश्वास रखते हैं। ट्रंप ने आगे कहा, अभी मैं घूम रहा था तभी अधिकारियों ने मुझे बताया- सर, आपके लिए एक बड़ा संदेश है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री और फील्ड मार्शल इस योजना का सौ फीसदी समर्थनक कर रहे हैं। शहबाज शरीफ ने एक्स पर ट्रंप की इस योजना का स्वागत किया

और कहा कि फलस्तीनियों और इस्राइलियों के बीच स्थायी शांति इस क्षेत्र में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के लिए जरूरी है। अगर इस्राइल और हमास दोनों ट्रंप की इस योजना पर सहमत होते हैं, तो युद्ध तत्काल खत्म हो जाएगा। योजना के मुताबिक, दोनों पक्ष बंधकों को रिहा करेंगे और हमास को पूरी तरह निरस्त्र किया जाएगा। इसके बाद इस्राइली सेना गाजा से पीछे हटेगी और सभी सैन्य अभियान रोक दिए जाएंगे। इस योजना के स्वीकार करने के बाद इस्राइल 72 घंटों के भीतर सभी बंधकों को वापस लेगा, चाहे वे जीवित हों या मृत। इसके बदले में इस्राइल उम्रकैद की सजा पा चुके 250 फलस्तीनी कैदियों और सात अक्तूबर 2023 के बाद गिरफ्तार किए गए 1700 गाजावासियों को रिहा करेगा, जिनमें महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। ट्रंप ने इससे पहले भी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और सेना प्रमुख असीम मुनीर की तारीफ की थी और उन्हें शानदार इंसान बताया था। यह बयान उन्होंने व्हाइट हाउस में एक तय मुलाकात से पहले दिया था। ट्रंप ने कहा था।

भारतीय मूल के ट्रक ड्राइवर ने खुद को बताया निर्दोष

फ्लोरिडा , एजेंसी। अमेरिका के फ्लोरिडा के हाईवे पर बीते दिनों हुए दर्दनाक सड़क हादसे में तीन लोगों की मौत के मामले में आरोपी भारतीय मूल के ट्रक ड्राइवर हरजिंदर सिंह ने खुद को निर्दोष बताया है। 28 वर्षीय हरजिंदर सिंह ने सोमवार को अदालत में अपनी पहली पेशी छोड़ दी और गुनाह कबूल नहीं है की दलील दी। बता दें कि 12 अगस्त को फ्लोरिडा के टर्नपाइक हाईवे पर हरजिंदर सिंह ने अपने बड़े ट्रक से अचानक गैरकानूनी यू-टर्न लेने की कोशिश की। तभी पीछे से आ रही एक मिनीवैन ट्रक से टकरा गई। हादसे में वैन के ड्राइवर और दो यात्रियों की मौके पर मौत हो गई। सिंह और उनके साथ ट्रक में मौजूद व्यक्ति को कोई चोट नहीं आई।

हरजिंदर सिंह पर विहिकलर होमिसाइड (यानि लापरवाही से गाड़ी चलाकर मौत की वजह बनना) के तीन मामले दर्ज किए गए हैं। इसके अलावा उन पर अमेरिका में अवैध रूप से रहने और इमिग्रेशन नियमों के उल्लंघन के आरोप भी हैं। उन्हें फ्लोरिडा की सेंट लूसी काउंटी जेल में रखा गया है और कोर्ट ने उन्हें जमानत देने से इनकार कर दिया है। इतना ही नहीं जांच में सामने आया कि सिंह को पहले वॉशिंगटन में और फिर कैलिफोर्निया में कमर्शियल ड्राइविंग लाइसेंस दिया गया था, जबकि उनके इमिग्रेशन स्टेटस के चलते उन्हें यह लाइसेंस मिलना ही नहीं चाहिए था। इस मामले के बाद ट्रंप प्रशासन और कैलिफोर्निया के गवर्नर के बीच बयानबाज़ी भी शुरू हो गई।

मामले में अमेरिका के परिवहन मंत्री शॉन डफी ने हादसे के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि कई राज्यों में गैर-कानूनी तरीके से सीडीएल (कमर्शियल ड्राइविंग लाइसेंस) जारी किए जा रहे थे। कैलिफोर्निया में सबसे ज्यादा लापरवाही मिली, जिसके चलते अमेरिकी सरकार अब राज्य से 160 मिलियन डालर (करीब 1300 करोड़ रुपये) की फंडिंग रोकने की चेतावनी दे रही है। अब इस मामले में अगली सुनवाई शुक्रवार को प्री-ट्रायल डॉकेट कॉल के रूप में होगी।

ट्रंप ने बदल दिया गाजा का नक्शा, खींची नीली-पीली और लाल रंग से सीमा

गाजा , एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने गाजा में युद्ध विराम की योजना पर सहमति जताई है। इसके साथ ही ट्रंप ने युद्धग्रस्त फिलिस्तीन क्षेत्र में युद्ध के बाद शासन स्थापित करने के लिए एक 20-सूत्रीय योजना की पेशकश की है। ट्रंप की इस योजना के तहत गाजा में एक अस्थायी शासी बोर्ड की स्थापना की जाएगी, जिसके अध्यक्ष ट्रंप होंगे, जबकि पूर्व ब्रिटिश प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर भी उस बोर्ड में शामिल होंगे। हालांकि, अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि हमास ने उन शर्तों पर हामी भर दी है या उसे 20 सूत्री प्रस्ताव पर ऐतराज है।

वाइट हाउस में ट्रंप ने 20 सूत्री प्रस्ताव का ऐलान करते हुए कहा कि इससे बेंजामिन सहमत हैं। उन्होंने इस मौके पर गाजा का एक नक्शा भी जारी किया, जिस पर लाल, नीली और पीली रंग से रेखाएं खींची गई हैं। इस नक्शे के अनुसार गाजा

और इजरायल के बीच हमेशा के लिए एक बफर जोन होगा। ट्रंप के प्रस्ताव के मुताबिक उस बफर जोन की रेखा के इस पार या उस पार इजरायली और फिलिस्तीनी सैनिकों और आम जनों के आने-जाने पर पूर्ण पाबंदी होगी। यानी न तो सैनिक और न ही आमजन इस रेखा को पार कर सकेंगे।

नीली-पीली और लाल रेखा का क्या मतलब : राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा स्वीकृत गाजा प्लान के तहत जो नक्शा जारी किया गया है, उस पर तीन रंग (नीली, पीली और लाल) की लाइनें हैं। उसके बाद इजरायल सीमा से सटा एक बफर जोन भी है। गाजा पट्टी के नक्शे पर जो नीली रेखा खींची गई है, वहां तक अभी इजरायली रक्षा बलों का कंट्रोल है। यह रेखा खान सूनुस के करीब है। इसके बाद राफा से होकर पीली रेखा खींची गई है। इसे विदड्रावल लाइव कहा गया है। इसका मतलब यह हुआ कि जैसे ही हमास बंधकों की रिहाई करेगा, 72 घंटे के अंदर इजरायली फौज इस पीली रेखा तक वापस आ जाएगी।

बफर जोन के आर-पार जाने की इजाजत नहीं : इस रेखा के बाद सेकंड विदड्रावल लाइन भी खींची गई है, जो लाल रंग से अंकित है। यानी पीछे हटती हुई इजरायली सेना इस लाइन तक आकर रुक जाएगी। इसके बाद एक और रेखा खींची गई है जो इजरायल की सीमा से सटी हुई है। इसे बफर जोन कहा गया है। थर्ड विदड्रावल के बाद इजरायली सैनिक इसी रेखा के पास आकर रुक जाएंगे। प्रस्ताव में कहा गया है कि इस बफर जोन के आर-पार जाने की किसी को भी इजाजत नहीं होगी। ट्रंप ने अपने प्लान को बताते हुए कहा कि इजरायल और अन्य देशों ने भी गाजा के इस नए नक्शे और प्लान की रूपरेखा को स्वीकार कर लिया है। प्लान में कहा गया है कि यदि योजना दोनों पक्षों द्वारा स्वीकार कर ली जाती है, तो युद्ध तुरंत समाप्त हो जाएगा। इसके अलावा गाजा में बंद सभी जीवित और मृत बंधकों को 72 घंटों के भीतर वापस लौटा दिया जाएगा और बदले में फिलिस्तीनी कैदियों को भी रिहा कर दिया जाएगा।

नेतन्याहू जो करना चाहेंगे, उसे पूरा समर्थन- ट्रंप : प्लान के मुताबिक गाजा पट्टी पर अस्थायी रूप से एक फ़िलिस्तीनी तकनीकी सरकार का शासन होगा, जिसमें हमास की कोई भूमिका नहीं होगी और इजरायल गाजा पर कब्ज़ा नहीं करेगा। ट्रंप ने उम्मीद जताई है कि हमास भी इस योजना को स्वीकर कर लेगा। उन्होंने हमास को धमकी देते हुए दो टूक कहा है कि अगर हमास इस योजना को नहीं मानता है तो वह इजरायली प्रधानमंत्री को खुली छूट देंगे और नेतन्याहू जो करना चाहेंगे, उसे उनका पूरा समर्थन होगा।

पीओजेके में प्रदर्शन के दौरान हिंसा में तीन की मौत; प्रदर्शनकारियों को मिला पुलिस का साथ

मुजफ्फराबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर (पीओजेके) में सोमवार को हालात उस वक्त बिगड़ गए जब क्षेत्र की पुलिस भी पाकिस्तानी सरकार के खिलाफ सड़कों पर उत्तर आई। अवामी एक्शन कमेटी पहले से क्षेत्रीय समस्याओं के खिलाफ शहबाज सरकार के विरोध में धरने-प्रदर्शन करती आ रही है। सोमवार को स्थानीय पुलिसकर्मियों में भी पाकिस्तान की सरकार के प्रति नाराजगी देखने को मिली। हिंसा में तीन लोगों की मौत हो गई और 22 लोग घायल हो गए।

स्थानीय पुलिसकर्मियों ने मांगे पूरी न होने पर पूरे पीओजेके में बंद किया। हालात नियंत्रित करने के लिए सरकार ने भारी संख्या में सुरक्षा बल को प्रांत में तैनात कर दिया। इनमें 7,000 सुरक्षाबल और फ्रंटियर फोर्स के सैनिकों को तैनाती मिली। स्थानीय पुलिसकर्मियों ने पाकिस्तानी सरकार के सामने 11 सूत्रीय मांगें रखीं थीं, जिनमें वेतन वृद्धि से लेकर जोखिम भत्ता, आवास और सरकारी योजनाओं का लाभ देने के प्रावधान शामिल थे।

कई घंटे की बैठक के बाद वार्ता हुई नाकाम : अवामी एक्शन कमेटी के नेता शौकत नवाज मीर ने कहा, हमारा अभियान किसी संस्था के खिलाफ नहीं है। लेकिन, पिछले 70 वर्षों से पीओजेके के लोगों को मौलिक अधिकार नहीं मिले हैं। बस अब बहुत हो गया। या तो हमें हमारे अधिकार दो और या फिर लोगों के गुस्से का सामना करें। पाकिस्तान सरकार कमेटी से बातचीत भी कर रही है। हालांकि 13 घंटे तक चली बैठक के बाद यह बार्ता नाकाम हो गई।

जनजीवन ठप : पीओजेके में सोमवार को पूर्ण हड़ताल हुई। बाजार, दुकानें और व्यावसायिक केंद्र बंद रहे। कश्मीरी आबादी द्वारा सभी व्यावसायिक गतिविधियों को रोककर संयुक्त कार्रवाई समिति के प्रति मजबूत समर्थन जताने के कारण पूरे क्षेत्र को सड़कें और गलियां वीरान रहीं। सोमवार को पीओजेके में जनजीवन ठप रहा।

इंटरनेट ब्लैकआउट पर अंतरराष्ट्रीय दखल का आग्रह : यूनाइटेड कश्मीर पोपुल्स नेशनल पार्टी (यूकेपीएनपी) ने पीओजेके में इंटरनेट व फोन सेवाएं बंद करने के बाद अंतरराष्ट्रीय अपील जारी की है। संगठन ने कहा, यह संचार ब्लैकआउट पाकिस्तानी अफसरों के शांतिपूर्ण असहमति को दबाने और बढ़ती अशांति में क्षेत्र को वैश्विक समुदाय से अलग-थलग करने की जानबूझकर की गई एक चाल है। प्रदर्शनकारी यहां बुनियादी अधिकारों व आर्थिक न्याय की मांग कर रहे हैं। पीओजेके में पाकिस्तान पर दशकों से लोगों के राजनीतिक दमन के आरोप लगे हैं, जिनके विरोध में प्रदर्शन चल रहे हैं। यूकेपीएनपी ने चेताया कि पाकिस्तान ने पूरे क्षेत्र में अर्धसैनिक रेंजर्स और अतिरिक्त सुरक्षा बलों को तैनात किया है, जिससे हिंसा संभव है।

फरवरी 2026 से एच-1बी वीजा में बड़े बदलाव करने जा रहा अमेरिका, भारतीय पेशेवरों पर पड़ेगा असर

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लुटनिक ने कहा कि फरवरी 2026 से पहले एच-1बी वीजा प्रक्रिया में काफी बदलाव होंगे। गौरतलब है कि ट्रंप सरकार ने एच-1बी वीजा की फीस कई गुना बढ़ाकर 100,000 अमेरिकी डॉलर कर दिया है और नया शुल्क भी फरवरी 2026 से ही लागू होगा। लुटनिक ने एच-1बी वीजा पर सस्ते तकनीकी सलाहकारों के देश में आने और अपने परिवारों को लाने के विचार को बिल्कुल गलत बताया।

लॉटरी सिस्टम को खत्म कर सकती है अमेरिकी सरकार : लुटनिक ने एक हालिया इंटरव्यू में बताया कि फरवरी 2026 में जब एच1बी वीजा की बढ़ी हुई फीस लागू होगी, तब इसमें कई बड़े बदलाव होंगे। लुटनिक ने संकेत दिए कि अमेरिकी सरकार एच1बी वीजा के तहत लॉटरी सिस्टम को खत्म कर सकती है। लुटनिक ने लॉटरी सिस्टम की आलोचना की और सवाल किया कि क्या किसी देश को लॉटरी के जरिए कुशल श्रमिकों को अपने देश में लाना चाहिए? अमेरिका के वाणिज्य मंत्री लुटनिक ने कहा कि एच-1बी लॉटरी को ठीक किया जाना चाहिए और अमेरिका को उच्च-कुशल नौकरियां केवल सबसे कुशल लोगों को ही देनी चाहिए।

उच्च प्रशिक्षित पेशेवरों को ही मिलेगी वरीयता : लुटनिक ने कहा कि कंपनियों को ऐसे तकनीकी सलाहकारों और प्रशिक्षुओं को रखने का विचार समाप्त कर देना चाहिए जो सस्ते हों। इस बारे में मेरी राय पक्की है। मुझे लगता है कि राष्ट्रपति इन मुद्दों

पर मेरे साथ हैं। मेरा मानना है कि सस्ते तकनीकी सलाहकार इस देश में आएं और अपने परिवारों को भी लाएं, ये मुझे बिल्कुल गलत लगता है, और मैं इसे सही नहीं मानता हूं। माना जा रहा है कि भविष्य में अमेरिकी सरकार एच1बी वीजा के तहत सिर्फ उच्च प्रशिक्षित पेशेवरों को ही वरीयता दे सकती है। एच-1बी वाजी की बढ़ी हुई फीस से अमेरिका में काम करने के इच्छुक भारतीय पेशेवरों पर गंभीर असर होगा। गौरतलब है कि एक लाख अमेरिकी डॉलर एच1बी वीजा के लिए एकमुश्त शुल्क होगा। हालांकि नई दरें मौजूदा वीजा धारकों पर लागू नहीं होगी और केवल नए आवेदकों को ही बढ़ी हुई फीस का भुगतान करना होगा। एच1बी वीजा प्रक्रिया को 1990 में शुरू किया गया था और दुनियाभर के पेशेवरों के लिए, जो अमेरिका में अपना करियर बनाना चाहते हैं, यह एच-1बी वीजा खासा लोकप्रिय है। अब जब अमेरिका सरकार इसके नियम कड़े करने जा रही है तो इसका असर भारतीय पेशेवरों पर भी पड़ेगा क्योंकि बड़ी संख्या में भारतीय पेशेवर एच-1बी वीजा के दम पर ही अमेरिका में काम कर पाते हैं। इस महीने अमेरिकी श्रम विभाग ने प्रोजेक्ट फायरवॉल की शुरुआत की घोषणा की है।

नोबेल की दौड़ में इस बार 338 दावेदार; लेकिन ट्रंप को नहीं मिलेगा

ओस्लो, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप नोबेल शांति पुरस्कार पाने के लिए खासे बेकरार हैं, लेकिन ट्रंप पुरस्कार की दौड़ से पहले ही बाहर हो गए हैं। दरअसल नोबेल के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति का नाम समयसीमा के बाद प्रस्तावित किया गया। ओस्लो में 10 अक्तूबर को होने वाले पुरस्कारों के एलान के लिए इस बार दौड़ में 338 दावेदार हैं।

नॉर्वेजियन नोबेल समिति में नॉर्वेजियन संसद के नियुक्त पांच व्यक्ति होते हैं। ये सदस्य अक्सर सेवानिवृत्त राजनेता होते हैं, लेकिन हमेशा नहीं। वर्तमान समिति का नेतृत्व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करने वाले समूह पीईएन इंटरनेशनल की नॉर्वेजियन शाखा के प्रमुख करते हैं। एक अन्य सदस्य एक शिक्षाविद हैं। इन सभी सदस्यों को नॉर्वेजियन राजनीतिक दल नामित करते हैं और इनकी नियुक्तियां नॉर्वे की संसद में शक्ति संतुलन को उजागर करती हैं। कौन जीत सकता है : ऐसा कोई भी शख्स जो स्वीडिश उद्योगपति अल्फ्रेड नोबेल की 1895 की वसीयत में दिए गए विवरण पर खरा उतरे। वह नोबेल पुरस्कार का हकदार होता है। इसके मुताबिक, पुरस्कार ऐसे शख्स को दिया जाना चाहिए जिसने राष्ट्रों के बीच भाईचारे को बढ़ावा देने,स्थायी सेनाओं को खत्म करने या कम करने और शांति सम्मेलनों की स्थापना और संवर्धन के लिए सबसे अधिक या सर्वोत्तम काम किया हो। पुरस्कार की तैयारी का काम देखने वाले नोबेल शांति पुरस्कार समिति के सचिव क्रिस्टियन बर्ग हार्पविकेन के मुताबिक, विजेता चुनना आसान नहीं होता। उनके अनुसार यह पुरस्कार मौजूदा वैश्विक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर समझना चाहिए। समिति दुनिया में हो रही घटनाओं,अंतरराष्ट्रीय रुझानों, बड़ी चिंताओं और सबसे आशाजनक प्रक्रियाएं मसलन, फिर चाहे वह शांति प्रक्रिया हो या

नया अंतरराष्ट्रीय समझौता तक हो सकती हैं। हार्पविकेन चर्चाओं में शामिल हो सकते हैं,लेकिन मतदान नहीं कर सकते।

कौन नामांकित कर सकता है : हजारों लोग नामों का प्रस्ताव कर सकते हैं। इनमें सरकारों और संसदों के सदस्य,वर्तमान राष्ट्राध्यक्ष,इतिहास, सामाजिक विज्ञान, कानून और दर्शनशास्त्र के विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और पूर्व नोबेल शांति पुरस्कार विजेता या अन्य शामिल होते है। इस साल पुरस्कार के लिए 338 नामांकित शख्स हैं। इन नामों की पूरी सूची 50 साल तक गुप्त रहती है, हालांकि कुछ लोग अपने नामांकन खुद जाहिर कर देते हैं। हार्पविकेन बताते हैं कि नामांकन 31 जनवरी को बंद हो जाते हैं। समिति सदस्य अपनी पहली बैठक (फरवरी) तक नाम जोड़ सकते हैं। उसके बाद सभी नामों की समीक्षा कर एक शॉर्टलिस्ट बनाई जाती है। हर उम्मीदवार का मूल्यांकन स्थायी सलाहकार और विशेषज्ञों करते हैं। समिति लगभग महीने में एक बार मिलती है और आमतौर पर निर्णय अगस्त या सितंबर में लेती है। समिति सहमति से फैसला चाहती है, लेकिन जरूरत पड़ने पर मतदान होता है। आखिरी बार समिति सदस्य का विरोध में इस्तीफा 1994 में हुआ था, तब फलस्तीनी नेता यासिर अराफात के इस्राइल के शिमोन पेरेज और यित्जाक राबिन को संयुक्त तौर पर नोबेल पुरस्कार मिला था। पूरी सूची 50 साल तक गुप्त रहती है, हालांकि नामांकन करने वाले चाहें तो नाम सार्वजनिक कर सकते हैं। इस साल जिनके नाम सामने आए उनमें अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय,नाटो, जेल में बंद हांगकांग कार्यकर्ता चाउ हैंग तुंग और कनाडाई मानवाधिकार वकील इरविन कोटलर शामिल हैं। कंबोडिया,इस्राइल और पाकिस्तान के नेताओं के मुताबिक, उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को नामित किया था,लेकिन ये नामांकन 31 जनवरी की समय सीमा के बाद वसंत और गर्मियों में किए गए थे,इसलिए वे 2025 के पुरस्कार के लिए मान्य नहीं हैं।विशेषज्ञों का कहना है कि सिर्फ तभी जब वह अपनी नीतियां बदलें,क्योंकि फिलहाल उन्हें उस वैश्विक व्यवस्था को कमजोर करने वाला माना जाता है जिसे समिति महत्व देती है। इसके बजाय,समिति पुरस्कार के लिए किसी मानवीय संगठन, पत्रकारों या संयुक्त राष्ट्र संस्था को चुन सकती है या चौंकाने वाला नाम का एलान कर सकती है।

आश्विन शुक्ल दशमी को विजयदशमी का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। रामलीला में जगह-जगह रावण वध का प्रदर्शन होता है। क्षत्रियों के यहाँ शस्त्र की पूजा होती है। इस दिन नीलकंठ का दर्शन बहुत शुभ माना जाता है। यह त्योहार क्षत्रियों का माना जाता है। इसमें अपराजिता देवी की पूजा होती है। यह पूजन भी सर्वसुख देने वाला है। दशहरा या विजया दशमी नवरात्रि के बाद दसवें दिन मनाया जाता है। इस दिन राम ने रावण का वध किया था ।

बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व

दशहरा

दशहरा (विजयदशमी या आयुध-पूजा) हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को इसका आयोजन होता है। भगवान राम ने इसी दिन रावण का वध किया था। इसे असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसीलिये इस दशमी को विजयादशमी के नाम से जाना जाता है। दशहरा वर्ष की तीन अत्यन्त शुभ तिथियों में से एक है, अन्य दो हैं चैत्र शुक्ल की एवं कार्तिक शुक्ल की प्रतिपदा। इसी दिन लोग नया कार्य प्रारम्भ करते हैं, शस्त्र-पूजा की जाती है। प्राचीन काल में राजा लोग इस दिन विजय की प्रार्थना कर रण-यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का आयोजन होता है। रावण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है। दशहरा अथवा विजयदशमी भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है। भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक है, शौर्य की उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है। दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों- काम, क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सद्प्रेरणा प्रदान करता है।

रामलीला मंचन

दशहरा अथवा विजयदशमी राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह शक्ति पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है। देश के कोने-कोने में यह विभिन्न रूपों से मनाया जाता है, बल्कि यह उतने ही जोश और उल्लास से दूसरे देशों में भी मनाया जाता जहां प्रवासी भारतीय रहते हैं।

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। अन्य स्थानों की ही भाँति यहाँ भी दस दिन अथवा एक सप्ताह पूर्व इस पर्व की तैयारी आरंभ हो जाती है। स्त्रियाँ और पुरुष सभी सुंदर वस्त्रों से सज्जित होकर तुरही, बिगुल, ढोल, नगाड़े,

बाँसुरी आदि-आदि जिसके पास जो वाद्य होता है, उसे लेकर बाहर निकलते हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता का धूम धाम से जुलूस निकाल कर पूजन करते हैं। देवताओं की मूर्तियों को बहुत ही आकर्षक पालकी में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। साथ ही वे अपने मुख्य देवता रघुनाथ जी की भी पूजा करते हैं। इस जुलूस में प्रशिक्षित नर्तक नटी नृत्य करते हैं। इस प्रकार जुलूस बनाकर नगर के मुख्य भागों से होते हुए नगर परिक्रमा करते हैं और कुल्लू नगर में देवता रघुनाथजी की वंदना से दशहरे के उत्सव का आरंभ करते हैं। दशमी के दिन इस उत्सव की शोभा निराली होती है। पंजाब में दशहरा नवरात्रि के नौ दिन का उपवास रखकर मनाते हैं। इस दौरान यहां आगंतुकों का स्वागत पारंपरिक मिठाई और उपहारों से किया जाता है। यहां भी रावण-दहन के आयोजन होते हैं, व मैदानों में मेले लगते हैं।

बस्तर में दशहरे के मुख्य कारण को राम की रावण पर विजय ना मानकर, लोग इसे मां दंतेश्वरी की आराधना को समर्पित एक पर्व मानते हैं। दंतेश्वरी माता बस्तर अंचल के निवासियों की आराध्य देवी हैं, जो दुर्गा का ही रूप हैं। यहां यह पर्व पूरे 75 दिन चलता है। यहां दशहरा श्रावण मास की अमावस से आश्विन मास की शुक्ल त्रयोदशी तक चलता है। प्रथम दिन जिसे काछिन गादि कहते हैं, देवी से समारोहारंभ की अनुमति ली जाती है। देवी एक कांटों की सेज पर विरजमान होती हैं, जिसे काछिन गादि कहते हैं। यह कन्या एक अनुसूचित जाति की है, जिससे बस्तर के राजपरिवार के व्यक्ति अनुमति लेते हैं। यह समारोह लगभग 15वीं शताब्दी से शुरु हुआ था। इसके बाद जोगी-बिठाई होती है, इसके बाद भीतर रैनी (विजयदशमी) और बाहर रैनी (रथ-यात्रा) और अंत में मुरिया दरबार होता है। इसका समापन अश्विन शुक्ल त्रयोदशी को ओहाड़ी पर्व से होता है। बंगाल, ओडिशा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में ही मनाया जाता है। यह बंगालियों,ओडिआ,और आसाम के लोगों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। पूरे बंगाल में पांच दिनों के लिए मनाया जाता है।ओडिशा और असम मे 4 दिन तक त्योहार चलता है। यहां देवी दुर्गा को भव्य सुशोभित पंडालों विराजमान करते हैं। देश के नामी कलाकारों को बुलवा कर दुर्गा की मूर्ति तैयार करवाई जाती हैं। इसके साथ अन्य देवी द्वेवताओं की भी कई मूर्तियां बनाई जाती हैं। त्योहार के दौरान शहर में छोटे मोटे स्टाल भी मिठाईयों से भरे रहते हैं। यहां षष्ठी के दिन दुर्गा देवी का बोधन, आमंत्रण एवं प्राण प्रतिष्ठा आदि का आयोजन किया जाता है। उसके उपरांत सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी के दिन प्रातः और सायंकाल दुर्गा की पूजा में व्यतीत होते हैं।अष्टमी के दिन महापूजा और बलि भि दि जाति है। दशमी के दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। प्रसाद चढ़ाया जाता है और प्रसाद वितरण किया जाता है। पुरुष आपस में आलिंगन करते हैं, जिसे कोलाकुली कहते हैं। स्त्रियां देवी के माथे पर सिंदूर चढ़ाती हैं, व देवी को अश्रुपूरित विदाई देती हैं। इसके साथ ही वे आपस में भी सिंदूर लगाती हैं, व सिंदूर से खेलते हैं। इस दिन यहां नीलकंठ पक्षी को देखना बहुत ही शुभ माना जाता है। तदनंतर देवी प्रतिमाओं को बड़े-बड़े ट्रकों में भर कर विसर्जन के लिए ले जाया जाता है। विसर्जन की यह यात्रा भी बड़ी शोभनीय और दर्शनीय होती है।

कर्नाटक में मैसूर का दशहरा विशेष उल्लेखनीय है। मैसूर में दशहरे के समय पूरे शहर की गलियों को रोशनी से सज्जित किया जाता है और हाथियों का श्रंगार कर पूरे शहर में एक भव्य जुलूस निकाला जाता है। इस समय प्रसिद्ध मैसूर महल को दीपमालिकाओं से दुलहन की तरह सजाया जाता है। इसके साथ शहर में लोग टार्च लाइट के संग नृत्य और संगीत की शोभा यात्रा का आनंद लेते हैं। इन द्रविड़ प्रदेशों में रावण-दहन का आयोजन नहीं किया जाता है।

गुजरात में मिट्टी सुशोभित रंगीन घड़ा देवी का प्रतीक माना जाता है और इसको कुंवारी लड़कियां सिर पर रखकर एक लोकप्रिय नृत्य करती हैं जिसे गरबा कहा जाता है। गरबा नृत्य इस पर्व की शान है। पुरुष एवं स्त्रियां दो छोटे रंगीन डंडों को संगीत की लय पर आपस में बजाते हुए घूम घूम कर नृत्य करते हैं। इस अवसर पर भक्ति, फिल्म तथा पारंपरिक लोक-संगीत सभी का समायोजन होता है। पूजा और आरती के बाद डांडिया रास का आयोजन पूरी रात होता रहता है। नवरात्रि में सोने और गहनों की खरीद को शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र में नवरात्रि के नौ दिन मां दुर्गा को समर्पित रहते हैं, जबकि दसवें दिन ज्ञान की देवी सरस्वती की वंदना की जाती है। इस दिन विद्यालय जाने वाले बच्चे अपनी पढ़ाई में आशीर्वाद पाने के लिए मां सरस्वती के तांत्रिक चिह्नों की पूजा करते हैं। किसी भी चीज को प्रारंभ करने के लिए खासकर विद्या आरंभ करने के लिए यह दिन काफी शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र के लोग इस दिन विवाह, गृह-प्रवेश एवं नये घर खरीदने का शुभ मुहूर्त समझते हैं।

विजय पर्व

दशहरे का उत्सव शक्ति और शक्ति का समन्वय बताने वाला उत्सव है। नवरात्रि के नौ दिन जगदम्बा की उपासना करके शक्तिशाली बना हुआ मनुष्य विजय प्राप्ति के लिए तत्पर रहता है। इस दृष्टि से दशहरे अर्थात विजय के लिए प्रस्थान का उत्सव का उत्सव आवश्यक भी है। भारतीय संस्कृति सदा से ही वीरता व शौर्य की समर्थक रही है। प्रत्येक व्यक्ति और समाज के रुधिर में वीरता का प्रादुर्भाव हो कारण से ही दशहरे का उत्सव मनाया जाता है। यदि कभी युद्ध अनिवार्य ही हो तब शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा ना कर उस पर हमला कर उसका पराभव करना ही कुशल राजनीति है। भगवान राम के समय से यह दिन विजय प्रस्थान का प्रतीक निश्चित है। भगवान राम ने रावण से युद्ध हेतु इसी दिन प्रस्थान किया था। मराठा रत्न शिवाजी ने भी औरंगजेब के विरुद्ध इसी दिन प्रस्थान करके हिन्दू धर्म का रक्षण किया था। भारतीय इतिहास में अनेक उदाहरण हैं जब हिन्दू राजा इस दिन विजय-प्रस्थान करते थे। इस पर्व को भगवती के विजया नाम पर भी विजयादशमी कहते हैं। इस दिन भगवान रामचंद्र चौदह वर्ष का वनवास भोगकर तथा रावण का वध कर अयोध्या पहुँचे थे। इसलिए भी इस पर्व को विजयादशमी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय विजय नामक मुहूर्त होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है। इसलिए भी इसे विजयादशमी कहते हैं। ऐसा माना गया है कि शत्रु पर विजय पाने के लिए इसी समय प्रस्थान करना चाहिए। इस दिन श्रवण नक्षत्र का योग और भी अधिक शुभ माना गया है। युद्ध करने का प्रसंग न होने पर भी इस काल में राजाओं (महत्वपूर्ण पदों पर पदासीन लोग) को सीमा का उल्लंघन करना चाहिए। दुर्योधन ने पांडवों को जुए में पराजित करके बारह वर्ष के वनवास के साथ तेरहवें वर्ष में अज्ञातवास की शर्त दी थी। तेरहवें वर्ष यदि उनका पता लग जाता तो उन्हें पुनः बारह वर्ष का वनवास भोगना पड़ता। इसी अज्ञातवास में अर्जुन ने अपना धनुष एक शमी वृक्ष पर रखा था तथा स्वयं वृहन्नला वेश में राजा विराट के यहँ नौकरी कर ली थी। जब गोरक्षा के लिए विराट के पुत्र धृष्टद्युम्न ने अर्जुन को अपने साथ लिया, तब अर्जुन ने शमी वृक्ष पर से अपने हथियार उठाकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी। विजयादशमी के दिन भगवान रामचंद्रजी के लंका पर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान करते समय शमी वृक्ष ने भगवान की विजय का उद्घोष किया था। विजयकाल में शमी पूजन इसीलिए होता है।

विजयदशमी पर पूजें शमी वृक्ष

भारत में प्रत्येक चेतन व अचेतन को सम्मान देते हुए उनका पूजन भी किया जाता है। इनमें वृक्ष-वनस्पतियाँ भी सम्मिलित हैं। जिस तरह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर नीम, ज्येष्ठ पूर्णिमा वट सावित्री व्रत पर वट वृक्ष, सोमवती अमावस्या पर तुलसी, पीपल का, भाद्रमास की कुशग्रहिणी अमावस्या पर कुशा का और कार्तिक की आँवला नवमी पर आँवले के वृक्ष के पूजन का महत्व है, उसी प्रकार आश्विन शुक्ल दशमी (विजयदशमी) पर दो विशेष प्रकार की वनस्पतियों के पूजन का महत्व है। इनमें से एक है शमी वृक्ष, जिसका पूजन रावण दहन के बाद करके इसकी पत्तियों को स्वर्ण पत्तियों के रूप में एक-दूसरे को ससम्मान प्रदान किया जाता है। इस परंपरा में विजय उल्लास पर्व की कामना के साथ समृद्धि की कामना का रहस्य छुपा हुआ है। दूसरी वनस्पति है अपराजिता (विष्णु-क्रांता)। यह पौधा अपने नाम के अनुरूप ही पहचान देता है। यह विष्णु को प्रिय है और प्रत्येक परिस्थिति में सहायक बनकर विजय प्रदान करने वाला है। नीले रंग के पुष्प का यह पौधा भारत में सुलभता से उपलब्ध है। घरों में समृद्धि के लिए तुलसी की भाँति इसकी नियमित सेवा की जाती है। आयुर्वेद के अनुसार यह पौधा कफ विकारों को दूर करते हुए मासिक धर्म संबंधी समस्याओं के अलावा प्रसव पीड़ा निवारण में भी महत्व रखता है। तंत्र शास्त्र में युद्ध अथवा मुकदमेबाजी के मामले में यह उपयोगी है। विजयदशमी को दुर्गा पूजन, अपराजिता पूजन, विजय प्रयाण, शमी पूजन तथा नवरात्र पारण के महान कर्म हैं। क्लाइटोरिसाटरनेटिया डालकुलम प्रजाति का यह पौधा भगवान राम युग के पहले से ही व्यवहार में स्थापित है और विद्वानों ने इसका बहुत महत्व बताया है। विजयदशमी को प्रातःकाल अपराजिता लता का पूजन, अतिविशिष्ट पूजा-प्रार्थना के बाद विसर्जन और धारण आदि से महत्वपूर्ण कार्य पूरे होते हैं। ऐसी पुराणों में मान्यता हैं।

विजयदशमी अर्थात् अपराजिता पूजन

विजयदशमी का पर्व उत्तर भारत में आश्विन शुक्ल पक्ष के नवरात्र संपन्न होने के उपरांत मनाया जाता है। शास्त्रों में दशहरे का असली नाम विजयदशमी है, जिसे अपराजिता पूजा भी कहते हैं। नवदुर्गाओं की माता अपराजिता संपूर्ण ब्रह्मांड की शक्तिदायिनी और ऊर्जा उत्सर्जन करने वाली हैं। महर्षि वेद व्यास ने अपराजिता देवी को आदिकाल की श्रेष्ठ फल देने वाली, देवताओं द्वारा पूजित और त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) द्वारा नित्य ध्यान में लाई जाने वाली देवी कहा है। गायत्री स्वरूप अपराजिता को निम्नलिखित मंत्र से भी पूजा जाता है -

ओम् महादेव्यै च विह्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात।।
ओम् नमः सर्व हिताथैयै जगदाधार दायिके।
साष्टांगोप्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः।
नमस्ते देवी देवेशि नमस्ते ईप्सित प्रदे।
नमस्ते जगतां धातित्र नमस्ते शंकरप्रिये।।
ओम् सर्वरूपमयी देवी सर्व देवीमयं जगत।
अतोष्हं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम।।

चारों युगों के आरंभ होने के समय से ही देवी अपराजिता के पूजन का भी आरंभ हुआ। कथा के अनुसार, देव-दानव युद्ध का काफी लंबा अंतराल बीत चुका था। नवदुर्गाओं ने दानवों के संपूर्ण वंश का नाश कर दिया। इसके बाद माता दुर्गा अपनी आदिशक्ति अपराजिता का पूजन करने के लिए शमी की घास लेकर हिमालय में अंर्तध्यान हो गईं और आर्य व्रत के राजाओं ने इस विजय को उत्सव के रूप में मनाते हुए विजयदशमी पर्व का आरंभ किया। उल्लेखनीय है कि उस वक्त विजयदशमी देवताओं द्वारा दानवों पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में मनाई गई थी। इस युद्ध में देवताओं के साथ धरती के राजा दशरथ, जनक और शोणक ऋषि जैसे राजाओं ने भी अपना युद्ध कौशल दिखाया था। बाद में रामायण काल में राम का राज्याभिषेक हुआ, लेकिन इसी दौरान रावण एवं अन्य दानवों के अत्याचारों से धरती फिर अशांत हो गई। धरती के जीवों को उनसे बचाने के लिए राम को वनवास पर जाना पड़ा। वैसे, राम ने अपने बाल्यकाल से ही आर्यावृत पर घिरे हुए राक्षसों को एक-एक करके मारा। सबसे बड़े राक्षस रावण को मारने के लिए उन्हें जो श्रम करना पड़ा, उसका उल्लेख रामायण में मिलता है। राम-रावण युद्ध नवरात्रों में हुआ। रावण की मृत्यु अष्टमी-नवमी के संधिकाल में और दाह संस्कार दशमी तिथि को हुआ। इसके बाद विजयदशमी मनाने का उद्देश्य रावण पर राम की जीत यानी असत्य पर सत्य की जीत हो गया। आज भी संपूर्ण रामायण की रामलीला नवरात्रों में ही खेली जाती है और दसवें दिन सायंकाल में रावण का पुतला जलाया जाता है। इस दौरान यह ध्यान रखा जाता है कि दाह के समय भदा न हो। रामायण काल के बाद दशहरा मूलतः राजाओं यानि क्षत्रिय राजाओं का त्योहार माना गया। इसे राजाओं के विजय उत्सव के रूप में देखा जाने लगा। वे युद्ध में विजयी होकर उत्सव के रूप में अपनी प्रजा के बीच पहुंचते थे। मैसूर में वहां के राजा की सवारी काफी प्रसिद्ध रही है। वह इस दिन हाथी पर बैठकर अपने महल से बाहर आते थे और दशहरा मैदान में मां अपराजिता की पूजा करते थे। राजाओं की परिपाटी समाप्त होने के बाद आज वहां के राज्यपाल इस परंपरा का निर्वहन करते हैं। इसी तरह, हिमाचल प्रदेश स्थित कुल्लू का दशहरा भी बहुत प्रसिद्ध है। यहां दशमी से अगले 15 दिन तक रोज वहां के भूतपूर्व राजा या उनके वंश को कोई व्यक्ति जनसभा में रावण दाह करके विजयदशमी का पूजन करता है। ऐसे ही सार्वजनिक उत्सव बनारस और इलाहाबाद में भी होते हैं। बंगाल में यह पूजन दुर्गा पूजा से ही जोड़ा जाता है। दुर्गा पूजा की महानवमी के बाद विजय दशमी के दिन कोलकाता समेत सारे बंगाल में मंदिरों में पंडाल सजते हैं और उत्सव मनाया जाता है। इसी दिन आदिशक्ति दुर्गा सहित काली पूजन और अपराजिता पूजन की रस्म भी निभाई जाती है। कुल मिलाकर, विजयदशमी बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। इस विजय के लिए देवी मां अपराजिता अपनी अपार शक्ति समय-समय पर शूरवीर राजाओं को प्रदान करती रहती हैं।

विजयदशमी का पर्व हमारी संस्कृति से जुड़ा है। अपार भीड़ खींचने वाली यह सांस्कृतिक परंपरा असत्य पर सत्य की जीत का प्रतीक है। इस दिन लोग अपने घर और बाहर उस विजयपर्व का आनंद उठाते हैं, जिसका आरंभ हजारों साल पहले हुआ था।

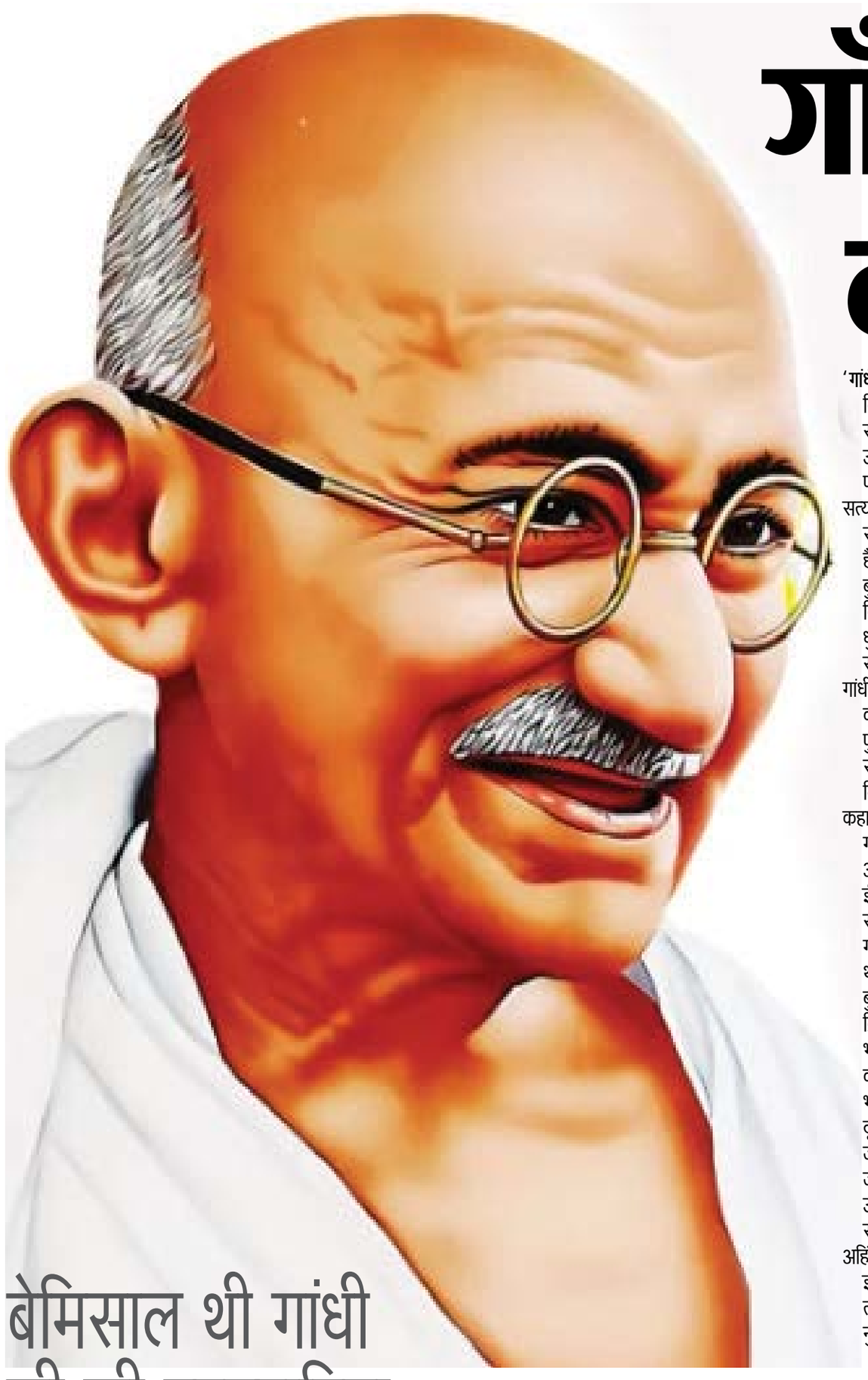

गाँधीवाद जीने की कला सिखाता है

'गांधीवाद' महात्मा गांधी के आदर्शों, विश्वासों एवं दर्शन से उदभूत विचारों के संग्रह को कहा जाता है, जो स्वतंत्रता संग्राम के सबसे बड़े राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेताओं में से थे। यह ऐसे उन सभी विचारों का एक समेकित रूप है जो गांधीजी ने जीवन पर्यंत जिया था।

सत्य एवं आग्रह दोंनो ही संस्कृत भाषा के शब्द हैं, जो भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान प्रचलित हुआ था, जिसका अर्थ होता है सत्य के प्रति सत्य के माध्यम से आग्रही होना ।गांधीवाद के बुनियादी तत्वों में से सत्य सर्वोपरि है। वे मानते थे कि सत्य ही किसी भी राजनैतिक संस्था, सामाजिक संस्थान इत्यादि की धुरी होनी चाहिए। वे अपने किसी भी राजनैतिक निर्णय को लेने से पहले सच्चाई के सिद्धांतों का पालन अवश्य करते थे।

गांधीजी का कहना था 'मेरे पास दुनियावालों को सिखाने के लिए कुछ भी नया नहीं है। सत्य एवं अहिंसा तो दुनिया में उतने ही पुराने हैं जितने हमारे पर्वत हैं।' सत्य, अहिंसा, मानवीय स्वतंत्रता, समानता एवं न्याय पर उनकी निष्ठा को उनकी निजी जिंदगी के उदाहरणों से बखूबी समझा जा सकता है।

कहा जाता है कि सत्य की व्याख्या अक्सर वस्तुनिष्ठ नहीं होती। गांधीवाद के अनुसार सत्य के पालन को अक्षरशः नहीं बल्कि आत्मिक सत्य को मानने की सलाह दी गयी है। यदि कोई ईमानदारी- पूर्वक मानता है कि अहिंसा आवश्यक है तो उसे सत्य की रक्षा के रूप में भी इसे स्वीकार करना चाहिए। जब गांधीजी प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान स्वदेश लौटे थे तो उन्होंने कहा था कि वे शायद युद्ध में ब्रिटिशों की ओर से भाग लेने में कोई बुराई नहीं मानते। गांधीजी के अनुसार ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा होते हुए भारतीयों के लिए समान अधिकार की मांग करना और साम्राज्य की सुरक्षा में अपनी भागीदारी न निभाना उचित नहीं होता। वहीं दूसरी तरफ द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जापान द्वारा भारत की सीमा के निकट पहुंच जाने पर गांधीजी ने युद्ध में भाग लेने को उचित नहीं माना बल्कि वहां अहिंसा का सहारा लेने की वकालत की है।

अहिंसा का सामान्य अर्थ है 'हिंसा न करना'। इसका व्यापक अर्थ है - किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से कोई नुकसान न पहुँचाना। मन में भी किसी का अहित न सोचना, किसी को कटुवाणी आदि के द्वारा भी पीड़ा न देना तथा कर्म से भी किसी भी अवस्था में, किसी भी प्राणी का कोई नुकसान न करना ।

गाँधीजी के अनसार धर्म और राजनीति को अलग नही किया जा सकता है,क्योंकि धर्म मनुष्य को सदाचारी बनने के लिए प्रेरित करता है । स्वधर्म सबका अपना अपना होता है पर धर्म मनुष्य को नैतिक बनाता है । सत्य बोलना, चोरी नहीं करना, परदुःखकातरता,दूसरों की सहायता करना आदी यही सभी धर्म सिखाते हैं । इन मूल्यों को अपनाने से ही राजनीति सेवा भाव से की जा सकेगी । गाँधीजी आडम्बर को धर्म नही मानते और जोर देकर कहते हैं कि मन्दिर मे बैठे भगवान मेरे राम नही है । स्वामी विवेकानंदजी के दरिद्र नारायण की संकल्पना को अपनाते हुए मानव सेवा को ही वो सच्चा धर्म मानते हैं । वास्तव मे उनका विश्वास है कि प्रत्येक प्राणी इश्वर की सन्तान हैं और ये सत्य है; सत्य ही ईश्वर है ।

गांधीजी सामाजिक समानता के समर्थक थे,वे मानवता व सामाजिक समरसता में विश्वास करते थे। वे अंतःकरण की पवित्रता को मानता थे ।साम्प्रदायिक सद्भाव व बंधुता उनके जीवन के मुख्य तत्व थे ।वास्तव में गांधीवाद का अर्थ है -वे आदर्श जो हमें जीने की कला सिखाते हैं । यह हक़ीक़त है कि गांधीवाद कालजयी है ।

अंत में यही कहूंगा कि-

'गांधी ने फैला दिया,सचमुच में उजियार ।
आओ हम समझें ज़रा,गांधीपथ का सार ।।'

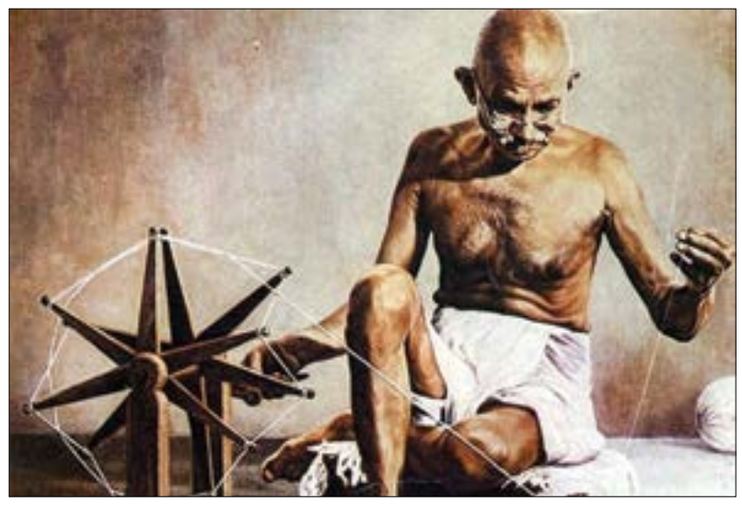

बेमिसाल थी गांधी जी की स्पष्टवादिता और सत्यनिष्ठा

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जीवन पर्यन्त देशवासियों के लिए आदर्श नायक बने रहे। स्वतंत्रता आन्दोलन में उनके अविस्मरणीय योगदान से तो पूरी दुनिया परिचित है। अहिंसा की राह पर चलते हुए भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्ति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले गांधी जी ने अपनी स्पष्टवादिता और अहिंसक विचारों से पूरी दुनिया को प्रभावित किया था। उन्हीं के द्वारा दिखलाए मार्ग पर चलते हुए लाखों-करोड़ों भारतीय देश को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने के लिए स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बने थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की ईमानदारी, स्पष्टवादिता, सत्यनिष्ठा और शिष्टता के अनेक किस्से प्रचलित हैं। इन्हीं में कुछ ऐसे प्रसंग भी सामने आते हैं, जब उनकी बातें सुनकर उनके सम्पर्क में आए व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो जाता था। दरअसल लोगों के दिलोदिमाग पर उनकी बातों का जादू सा असर होता था।

गांधी जी एक बार श्रीमती सरोजिनी नायडू के साथ बैडमिंटन खेल रहे थे। श्रीमती नायडू के दाएं हाथ में चोट लगी थी। यह देख गांधी जी ने भी अपने बाएं हाथ में ही रैकेट पकड़ लिया। श्रीमती नायडू का ध्यान जब उस ओर गया तो वह खिलखिलाकर हंस पड़ी और कहने लगी, ''आपको तो यह भी नहीं पता कि रैकेट कौनसे हाथ में पकड़ा जाता है?'' बापू ने जवाब दिया, ''आपने भी तो अपने दाएं हाथ में चोट लगी होने के कारण बाएं हाथ में रैकेट पकड़ा हुआ है और मैं किसी की भी मजबूरी का फायदा नहीं उठाना चाहता। अगर आप मजबूरी के कारण दाएं हाथ से रैकेट पकड़कर नहीं खेल सकती तो मैं अपने दाएं हाथ का फायदा क्यों उठाऊं?''

आजादी की लड़ाई के दिनों में गांधी जी सश्रम कारावास की सजा भुगत रहे थे। एक दिन जब उनके हिस्से का सारा काम समाप्त हो गया तो वे खाली समय में एक ओर बैठकर एक पुस्तक पढ़ने लगे। तभी जेल का एक संतरी दौड़ा-दौड़ा उनके पास आया और उनसे कहने लगा कि जेलर साहब जेल का मुआयना करने इसी ओर आ रहे हैं, इसलिए वो उनको दिखाने के लिए कुछ न कुछ काम करते रहें लेकिन गांधी जी ने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया और कहा, ''इससे तो बेहतर होगा कि मुझे ऐसे स्थान पर काम करने के लिए भेजा जाए, जहां काम इतना अधिक काम हो कि उसे समय से पहले पूरा किया ही न जा सके।''

एक बार गांधी जी चम्पारण से बतिया रेलगाड़ी में सफर कर रहे थे। गाड़ी में अधिक भीड़ न होने के कारण वे तीसरे दर्जे के डिब्बे में जाकर एक बर्थ पर लेट गए। अगले स्टेशन पर जब रेलगाड़ी रूकी तो एक किसान उस डिब्बे में चढ़ा। उसने बर्थ पर लेटे हुए गांधी जी को अपशब्द बोलते हुए कहा, ''यहां से खड़े हो जाओ। बर्थ पर ऐसे पसरे पड़े हो, जैसे यह रेलगाड़ी तुम्हारे बाप की है।'' किसान को बिना कुछ कहे गांधी जी चुपचाप उठकर एक ओर बैठ गए। तभी किसान बर्थ पर आराम से बैठते हुए मस्ती में गाने लगा, ''धन-धन गांधी जी महाराज! दुःखियों का दुःख मिटाने वाले गांधी जी ...।''

दिलचस्प बात यह थी कि वह किसान कहीं और नहीं बल्कि बतिया में गांधी जी के दर्शनों के लिए ही जा रहा था लेकिन इससे पहले उसने गांधी जी को कभी देखा नहीं था, इसलिए रेलगाड़ी में उन्हें पहचान नहीं सका। बतिया पहुंचने पर स्टेशन पर जब हजारों लोगों की भीड़ ने गांधी जी का स्वागत किया, तब उस किसान को वास्तविकता का अहसास हुआ और शर्म के मारे उसकी नजरें झुक गई। वह गांधी जी के चरणों में गिरकर उनसे क्षमायाचना करने लगा। गांधी जी ने उसे उठाकर प्रेमपूर्वक अपने गले से लगा लिया।

ऐसी ही एक घटना दक्षिण अफ्रीका की है। एक प्रसिद्ध भारतीय व्यापारी रूस्तम जी गांधी जी के मुवक्किल और निकटतम सहयोगी भी थे। वे अपने सभी कार्य अक्सर गांधी जी की सलाह के अनुसार ही किया करते थे। उस दौरान कलकत्ता और बम्बई से उनका काफी सामान आता था, जिस पर वे प्रायः चुंगी चुराया करते थे। उन्होंने यह बात सदैव गांधी जी से छिपाकर रखी। एक बार चुंगी अधिकारियों द्वारा रूस्तम जी की यह चोरी पकड़ ली गई और उनके जेल जाने की नौबत आ गई। वे दौड़े-दौड़े गांधी जी के पास पहुंचे और उन्हें पूरा वृतांत सुना डाला। गांधी जी ने उनकी पूरी बात गौर से सुनने के बाद उन्हें उनके अपराध के लिए कड़ी फटकार लगाई और सलाह दी कि तुम सीधे चुंगी अधिकारियों के पास जाकर अपना अपराध स्वयं स्वीकार कर लो, फिर भले ही इससे तुम्हें जेल की सजा ही क्यों न हो जाए। गांधी जी की सलाह मानकर रूस्तम जी उसी समय चुंगी अधिकारियों के पास पहुंचे और अपना अपराध स्वीकारते हुए भविष्य में फिर कभी ऐसा अपराध नहीं करने का वचन दिया। चुंगी अधिकारी उनकी स्पष्टवादिता से काफी प्रसन्न हुए और उन्होंने उन पर मुकद्दमा चलाने का विचार त्यागकर उनसे चुंगी की बकाया राशि से दोगुनी राशि वसूलकर उन्हें छोड़ दिया। ऐसा था गांधी जी का बातों का लोगों के दिलोदिमाग पर जादुई असर।

ऐसे थे लाल बहादुर शास्त्री

वर्ष 1964 में प्रधानमंत्री बनने से पहले लाल बहादुर शास्त्री विदेश मंत्री, गृहमंत्री और रेल मंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद संभाल चुके थे। ईमानदार छवि और सादगीपूर्ण जीवन जीने वाले लाल बहादुर शास्त्री नैतिकता की मिसाल थे। जब शास्त्री जी प्रधानमंत्री बने, तब उन्हें सरकारी आवास के साथ इंपाला शेवरले कार भी मिली थी लेकिन उसका उपयोग वे बेहद कम किया करते थे। किसी राजकीय अतिथि के आने पर ही वह गाड़ी निकाली जाती थी। एक बार शास्त्री जी के बेटे सुनील शास्त्री किसी निजी कार्य के लिए यही सरकारी कार उनसे बगैर पूछे ले गए और अपना काम पूरा करने के पश्चात् कार चुपचाप लाकर खड़ी कर दी। जब शास्त्री जी को इस बात का पता चला तो उन्होंने ड्राइवर को बुलाकर पूछा कि गाड़ी कितने किलोमीटर चली? ड्राइवर ने बताया कि गाड़ी कुल 14 किलोमीटर चली है। उसी क्षण शास्त्री जी ने उसे निर्देश दिया कि रिकॉर्ड में लिख दो, 'चौदह किलोमीटर प्राइवेट यूज'। उसके बाद उन्होंने पत्नी ललिता को बुलाकर निर्देश दिया कि निजी कार्य के लिए गाड़ी का इस्तेमाल करने के लिए वह सात पैसे प्रति किलोमीटर की दर से सरकारी कोष में पैसे जमा करवा दें।

प्रधानमंत्री बनने के बाद शास्त्री जी पहली बार अपने घर काशी आ रहे थे, तब पुलिस-प्रशासन उनके स्वागत के लिए चार महीने पहले से ही तैयारियों में जुट गया था। चूंकि उनके घर तक जाने वाली गलियां काफी संकरी थी, जिसके चलते उनकी गाड़ी का वहां तक पहुंचना संभव नहीं था, इसलिए प्रशासन द्वारा वहां तक रास्ता बनाने के लिए गलियों को चौड़ा करने का निर्णय लिया गया। शास्त्री जी को यह पता चला तो उन्होंने तुरंत संदेश भेजा कि गली को चौड़ा करने के लिए कोई भी मकान तोड़ा न जाए, मैं पैदल ही घर जाऊंगा।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 1940 के दशक में लाला लाजपत राय की संस्था 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसायटी' द्वारा गरीब पृष्ठभूमि वाले स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों को जीवनयापन हेतु आर्थिक मदद दी जाया करती थी। उसी समय की बात है, जब लाल बहादुर शास्त्री जेल में थे। उन्होंने उस दौरान जेल से ही अपनी पत्नी ललिता को एक पत्र लिखकर पूछा कि उन्हें संस्था से पैसे समय पर मिल रहे हैं या नहीं और क्या इतनी राशि परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त है? पत्नी ने उत्तर लिखा कि उन्हें प्रतिमाह पचास रुपये मिलते हैं, जिसमें से करीब चालीस रुपये ही खर्च हो पाते हैं, शेष राशि वह बचा लेती हैं। पत्नी का यह जवाब मिलने के बाद शास्त्री जी ने संस्था को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने धन्यवाद देते हुए कहा कि अगली बार से उनके परिवार को केवल चालीस रुपये ही भेजे जाएं और बचे हुए दस रुपये से किसी और जरूरतमंद की सहायता कर दी जाए।

रेलमंत्री रहते हुए शास्त्री जी एक बार रेल के ए.सी. कोच में सफर कर रहे थे। उस दौरान वे यात्रियों की समस्या जानने के लिए जनरल बोगी में चले गए। वहां उन्होंने अनुभव किया कि यात्रियों को कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे वे काफी नाराज हुए और उन्होंने जनरल डिब्बे के यात्रियों को भी सुविधाएं देने का निर्णय लिया। रेल के जनरल डिब्बों में पहली बार पंखा लगवाते हुए रेलों में यात्रियों को खानपान की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए पैंट्री की सुविधा भी उन्होंने शुरू करवाई। 2 अक्तूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में जन्मे भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की आज हम जयंती मना रहे है। उनके बाद कई प्रधानमंत्रियों ने देश की बागडोर संभाली लेकिन उनके जितना सादगी वाला कोई भी दूसरा प्रधानमंत्री देखने को नहीं मिला। सही मायनों में शास्त्री जी को उनकी सादगी, कुशल नेतृत्व और जनकल्याणकारी विचारों के लिए ही स्मरण किया जाता है और सदैव किया भी जाता रहेगा। उनके पद्चिन्हों पर चलने का संकल्प लेना ही सच्चे अर्थों में उन्हें हमारी श्रद्धांजलि होगी।

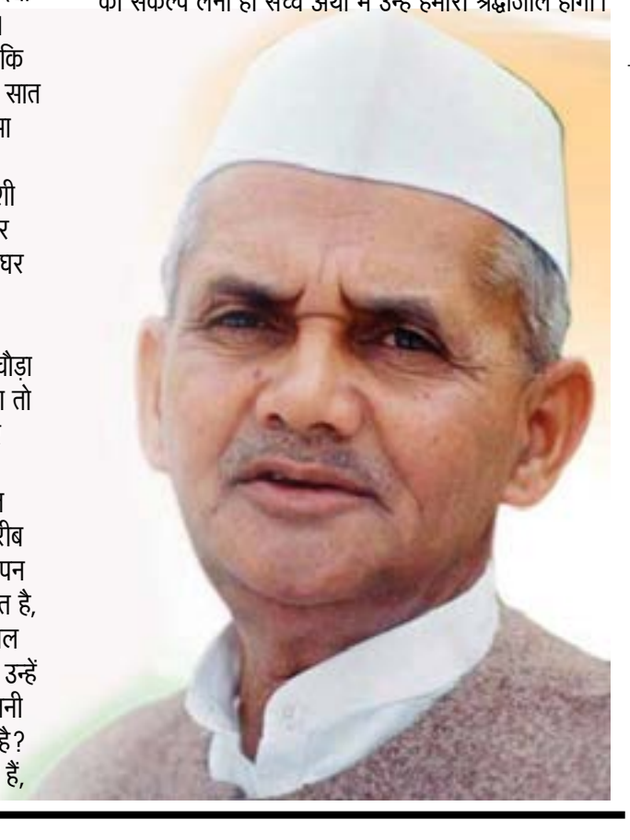

डीडीए के नवरात्रि महोत्सव में अष्टमी पर हुई महाआरती

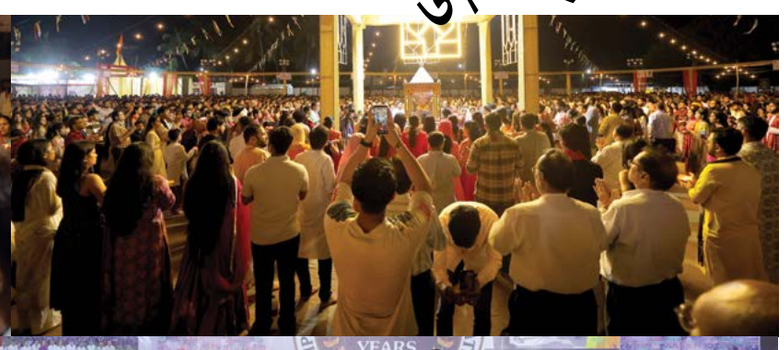

■ संघ प्रदेश थ्रीडी भाजपा अध्यक्ष महेश आगरिया, दमण जिला भाजपा अध्यक्ष भरत पटेल, दमण शहर भाजपा अध्यक्ष पीयूष पटेल, प्रशासनिक अधिकारी चार्मी पारेख, अल्फा एथलीट जिम संचालिका उषा सावंत ने शामिल होकर मां अंबे का लिया आशीर्वाद ■ दिलीपनगर ग्राउंड में दशहरा पर रावण दहन का होगा आयोजन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 01 अक्टूबर।

डीडीए द्वारा दिलीपनगर में आयोजित भव्य नवरात्रि महोत्सव में अष्टमी के दिन महाआरती का आयोजन किया गया था। जिसमें बडी संख्या में गरबा खेलैयाओं ने शामिल होकर मां अंबे की महाआरती की। डीडीए के आमंत्रण पर संघ प्रदेश दादरा एवं नगर हवेली और दमण-दीव भाजपा अध्यक्ष महेश आगरिया, दमण जिला भाजपा अध्यक्ष भरत पटेल, दमण शहर भाजपा अध्यक्ष पीयूष पटेल, प्रशासनिक अधिकारी चार्मी पारेख, अल्फा एथलीट जिम संचालिका उषा सावंत ने डीडीए के नवरात्रि महोत्सव में पहुंचकर मां अंबे की आरती उतारी और आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर डीडीए चेयरमैन लखम टंडेल और उनकी टीम द्वारा उपस्थित महानुभावों का स्वागत भी किया गया। इस पूरे आयोजन को सफल बनाने में डीडीए चेयरमैन लखम टंडेल और उनकी टीम तथा दिलीपनगर महिला मंडल की टीम पूरा सहयोग कर रही है। उल्लेखनीय है कि दिलीपनगर ग्राउंड में दशहरा पर रावण दहन किया जायेगा। इसके साथ ही नवरात्रि महोत्सव का समापन होगा।

दमण जिला प्रशासन द्वारा देवका बिच पर सफाई अभियान का आयोजन आज

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 01 अक्टूबर। दमण जिला प्रशासन द्वारा देवका बिच पर 02 अक्टूबर को बिच सफाई अभियान का आयोजन किया जाएगा। आज सुबह 6 बजे से नानी दमण देवका बिच पर आयोजित होने वाले बिच सफाई अभियान में दमण जिले के नागरिकों को शामिल होने के लिए अनुरोध किया गया है। जिला प्रशासन ने दमण के सभी नागरिकों से अनुरोध करते हुए कहा है कि वे इस सफाई अभियान में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर दमण को स्वच्छ, हरित एवं सुंदर बनाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें।

दमण जिला एवं सत्र न्यायालय ने हत्या के प्रयास में आरोपी को 10 वर्ष की कठोर कारावास और 5 हजार रुपये के अर्थदंड की सुनाई सजा

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 01 अक्टूबर। दमण जिला एवं सत्र न्यायायल में 3 साल से चल रहे हत्या के प्रयास मामले की सुनवाई के बाद बुधवार को जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री आर. एस. तिवारी ने सबूतों और गवाहों को सुनने के बाद आरोपी लखनदास गरीबदास पानिका को दोषी मानते हुए 10 वर्ष की कठोर कारावास के साथ 5 हजार रुपये के अर्थदंड की सजा सुनाई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, सोमनाथ स्थित सेलो कंपनी में काम करने वाले लखनदास ने 24 जुलाई 2022 को वेतन के भुगतान को लेकर कंपनी के सुपरवाइजर अतुल कुमार शिव कुमार गुप्ता को गोली मार दी। गोली अतुल के पेट में छेद करके निकल गई। सूचना मिलने पर तत्कालीन नानी दमण थाना प्रभारी सोहिल जीवाणी के नेतृत्व में पुलिस ने मौके पर पहुंचकर आरोपी लखनदास गरीबदास पानिका को रंगे हाथ गिरफ्तार कर पीड़ित को ईलाज के लिए मरवड़ जिला अस्पताल में भर्ती कराया था। मामले की जांच अधिकारी हिरल पटेल ने क्राइम संख्या 69/2022 में भारतीय दंड संहिता की धारा 307, आर्म्स एक्ट की धारा 25 एवं 27 के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरु की थी। इस मामले में सीसीटीवी फुटेज सहित अन्य सबूत एकत्रित किए। प्राथमिक जांच के बाद पीएसआई भाविनी हलपति ने 21 अक्टूबर 2022 को जिला एवं सत्र न्यायालय में आरोप पत्र पेश किया। आज हुई सुनवाई के दौरान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री आर. एस. तिवारी ने सीसीटीवी फुटेज, एफएसएल सहित कुल 15 गवाहों को सुनने के बाद आरोपी लखनदास गरीबदास पानिका को दोषी मानते हुए 10 वर्ष की कठोर कारावास तथा 5 हजार रुपये के अर्थदंड की सजा सुनाई है। सरकार की तरफ से इस मामले में सरकारी लोक अभियोजक हरिओम उपाध्याय ने जोरदार पैरवी की।

सुप्रीम सोसायटी खारीवाड के नवरात्रि महोत्सव में पहुंचकर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष महेश आगरिया ने मां अंबे की उतारी आरती

■ दमण जिला भाजपा अध्यक्ष भरत पटेल और डीएमसी के पूर्व प्रमुख जयंती पटेल एवं दमण शहर भाजपा प्रमुख पीयूष पटेल ने मां अंबे का लिया आशीर्वाद

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 01 अक्टूबर। नानी दमण के खारीवाड विस्तार स्थित सुप्रीम सोसायटी में नवरात्रि महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया है। प्रतिदिन मां अंबे की आरती के बाद गरबा का आयोजन किया जाता है। संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण-दीव भाजपा अध्यक्ष महेश आगरिया, दमण जिला भाजपा अध्यक्ष भरत पटेल, डीएमसी के पूर्व प्रमुख जयंती पटेल एवं दमण शहर भाजपा प्रमुख पीयूष पटेल ने सुप्रीम सोसायटी खारीवाड के नवरात्रि महोत्सव में पहुंचकर मां अंबे की आरती उतारी। इस अवसर पर सभी महानुभावों ने मां अंबे का आशीर्वाद लेकर प्रदेश एवं देश की सुख-शांति और खुशहाली की कामना की। इस दौरान सुप्रीम सोसायटी के नागरिकों द्वारा महानुभावों का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत भी किया गया।

जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने दमण नर्सिंग कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. ए. कनिमोझी के हत्यारे को सुनाई आजीवन कारावास की सजा

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण/ सिलवासा 01 अक्टूबर। दादरा नगर हवेली जिला एवं सत्र न्यायायल में करीब 3 साल से चल रहे दमण नर्सिंग कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. ए. कनिमोझी की हत्या के मामले की सुनवाई के बाद आज जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती विभा पी. इंग्ले ने आरोपी दमण के पटलारा निवासी सावन जगदीश पटेल को दोषी पाया और उसे आजीवन कारावास के साथ 15 हजार रूपए के अर्थदंड की सजा सुनाई है। हत्यारे ने प्रिंसिपल को कार के साथ जला दिया था। पुड्डुचेरी निवासी डॉ. ए. कनिमोझी 10 अक्टूबर 2020 से दमण नर्सिंग कॉलेज में प्रिंसिपल के पद पर कार्यरत थीं। फरवरी 2022 को पुलिस को डॉ. कनिमोझी के लापता होने की सूचना मिली। जिसके बाद जांच शुरू की, लेकिन कुछ पता नहीं चला। बाद में पड़ताल में सामने आया कि दमण नर्सिंग कॉलेज के अकाउंटेंट सावन जगदीश पटेल निवासी पटलारा, मोटी दमण ने डॉ. ए. कनिमोझी का अपहरण करके उनकी बेरहमी से हत्या कर दी और उन्हें उन्हीं की कार में जला दिया। सिलवासा पुलिस स्टेशन में इस मामले में अपराध संख्या 60/2022 में आरोपी सावन पटेल के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की गंभीर धाराओं 365 (अपहरण), 346 (गोपनीय कैद), 302 (हत्या), 201 (सबूत नष्ट करना), 397 (डकैती) और 409 (विश्वासघात) के तहत मामला दर्ज कर अदालत में पेश किया गया। पुलिस जांच में यह साफ हो गया कि आरोपी ने पूर्व नियोजित साजिश के तहत इस जघन्य वारदात को अंजाम दिया था। आज हुई सुनवाई के दौरान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती विभा पी. इंग्ले ने गवाहों के बयानात और साक्ष्यों के आधार पर सावन जगदीश पटेल को दोषी मानते हुए आजीवन कारावास की सजा के साथ-साथ 15 हजार के अर्थदंड से दंडित किया। इस मामले में सरकारी पक्ष की पैरवी पब्लिक प्रोसिक्यूटर जी. जी. पुरोहित और अतिरिक्त पब्लिक प्रोसिक्यूटर निपुना राठौड़ ने की, जबकि जांच अधिकारी पी. एम. पटेल ने पूरे केस की विवेचना अदालत के समक्ष रखी।

राणा स्ट्रीट में नवयुग ग्रुप द्वारा आयोजित नवरात्रि महोत्सव में कई महानुभावों ने की शिरकत

■ भाजपा नेता विशाल टंडेल, काउंसिलर प्रमोद राणा, रूदेश टंडेल, हिरेन जोशी, उमेश मालंकर, जयंत महापात्रा, दमण राणा समाज के अध्यक्ष अनिल राणा, सचिव सुरेश राणा, ट्रस्टी हर्षद राणा एवं प्रवीण राणा का हुआ भव्य स्वागत

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 01 अक्टूबर। दमण के राणा स्ट्रीट में नवयुग ग्रुप द्वारा नवरात्रि महोत्सव का आयोजन किया गया है। जिसमें कई महानुभावों ने पहुंचकर मां अंबे का आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित गुजरात भाजपा ओबीसी मोर्चा के प्रभारी विशाल टंडेल का दमण राणा समाज के युवा प्रमुख रवि राणा और प्रवीणाबेन राणा एवं महिला टीम ने पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। इसके साथ ही डीएमसी काउंसिलर प्रमोद राणा, सार्वजनिक स्कूल के सेक्रेटरी एवं सांईबाबा ट्रस्ट के प्रमुख रूदेश टंडेल, समस्त गुजराती ब्राह्मण समाज के प्रमुख हिरेन जोशी, देवज्ञ सोनी समाज के प्रमुख उमेश मालंकर, पूर्व शहर भाजपा उपाध्यक्ष जयंत महापात्रा, दमण राणा समाज के अध्यक्ष अनिल राणा, सचिव सुरेश राणा, ट्रस्टी हर्षद राणा एवं प्रवीण राणा का भी स्वागत किया गया।

स्वामी: मारुतिनंदन पब्लिक, संपादक, प्रकाशक व मुद्रक विजय जगदीशचंद्र भट्ट द्वारा गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल, नानी दमण - 396210 से प्रकाशित तथा असली आजादी प्रेस गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल नानी दमण - 396210 से मुद्रित।
(समाचारों के चयन के लिए संपूर्ण जिम्मेदारी पीआरबी एक्ट के अंतर्गत संपादक की होगी। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दमण न्यायालय के अधीन होगा।)